उड़ती कला में ले जाने वाली ये अव्यक्त वाणियाँ

जनवरी 1983 से जुलाई 1983 तक की वाणियों का संग्रह आपके हाथ में है। इनमें योग स्थिति को उच्च बनाने, व्यवहार का सम्पूर्ण दिव्यीकरण करने और परोपकार तथा लोक सेवा द्वारा स्वयं भी दूसरों के आशीर्वाद का पात्र बनने और एक नये दिव्य समाज का निमार्ण करने आदि के बादे में बहुत ही उत्तम शिक्षाओं एवं युक्तियों का उल्लेख है। बाबा का एक-एक शब्द अनमोल, रहस्यों से भरा हुआ है, एक एक बोल से बच्चों के प्रति अति स्नेह टपकता है। बाबा चाहते है और उनकी आशा है कि हम शीघ्र बाप समान बन जाएँ।

ये वाणियाँ न केवल अपने में एक अनमोल खजाना है बल्कि पवित्रता, दिव्यता, शान्ति, शक्ति आनन्द और अन्य सब प्रकार के खजानों के लिए चाबी हैं। इन वाणियों को पढ़ते-पढ़ते आत्मा उड़ने लगती है। यदि इन वाणियों को बार-बार पढ़ा जाए और दृढ़ता से धारणा में लाया जाए, शीघ्र ही आत्मा उड़ती कला में जा सकती है।

इन वाणियों में बाबा ने विशेष कुमारों के लिए, कन्याओं के लिए, बच्चों के लिए माताओं के लिए तथा अधर कुमारों के लिए अनमोल शिक्षाएँ दी हैं। इन वाणियों में कितने ही हीरे और रत्न भरे पड़े हैं। वे पढ़ने, मनन करने और धारण करने योग्य हैं ताकि आत्मा स्वरूप स्थित होकर उड़ती कला का अनुभव कर सके।

**जगदीश**

3.1.83

## डबल विदेशी बच्चों से बाप दादा रूह-रिहान

सर्व की विशेषताओं को बेहद के कार्य में लगाने वाले बेहद की सथिति में स्थित करने वाले विश्व पिता बोले :–

‘‘ आज बापदादा विशेष डबल विदेशी बच्चों से मिलने के लिए आये हैं। सभी बच्चे दूर-दूर से अपने स्वीट होम में पहुँच गये। जहाँ सर्व प्राप्ति का अनुभव करने का स्वत: ही वरदान प्राप्त होता है। ऐसे वरदान भूमि पर वरदाता बाप से मिलने आये हैं। बापदादा भी कल्प-कल्प के अधिकारी बच्चों को देख हर्षित होते हैं। बापदादा देख रहे हैं भारत में नजदीक रहने वाली कई आत्मायें अभी तक प्यासी बन ढूंढ रही हैं। लेकिन साकार रूप से दूर-दूर रहने वाले डबल विदेशी बच्चों ने दूर से ही अपने बाप को पहचान, अधिकार को पा लिया। दूर वाले समीप हो गये और समीप वाले दूर हो गये। ऐसे बच्चों के भाग्य की कामल देख बापदादा भी हर्षित होते हैं। आज वतन में भी बापदादा डबल विदेशी बच्चों की विशेषताओं पर रूह-रिहान कर रहे थे। भारतवासी बच्चों की और डबल विदेशी बच्चों की दोनों की अपनी अपनी विशेषता थी। आज बच्चों की कमाल के गुण गा रहे थे। त्याग क्या किया और भाग्य क्या लिया। लेकिन बच्चों की चतुराई देख रहे थे। की त्याग भी बिना भाग्य के नहीं किया है। सौदा करने में भी पक्के व्यापारी हैं। पहले प्राप्ति का अनुभव हुआ, अच्छी प्राप्ति क्या उसकी लिस्ट निकालो तो क्या रिजल्ट निकलेगी? एक छोड़ा और पदम पाया। तो यह छोड़ना हुआ या पाना हुआ? हम आत्मायें विश्व की ऐसा श्रेष्ठ विशेष आत्मायें बनेंगी, डायरेक्ट बाप से सम्बन्ध में आने वाली बनेंगी – ऐसा कब सोचा था। क्रिश्चियन से कृष्णपुरी में आ जायेंगे यह कभी सोचा था। धर्मपिता के फालोअर थे। तना के बजाए टाली में अटक गये। और अब इस वैरायटी कल्प वृक्ष का तना आदि सनातन ब्राहमण सो देवता धर्म के बिना बन गये। फाउन्डेशन बन गये। ऐसी प्राप्ति को देख छोड़ा क्या। अल्पकाल की निंद्रा को जीता। नींद में सोने को छोड़ा और स्वंय सोना (गोल्ड) बन गये। बापदादा डबल विदेशियो का सवेरे-सवेरे उठ तैयार होना देख मुस्कराते हैं। आराम से उठने वाले और अभी कैसे उठते हैं। नींद का त्याग किया – त्याग के पहले भाग्य को देख, अमृतवेले काअलौकिक अनुभव करने के बाद यह नींद भी क्या लगती है। खान-पान छोड़ा या बीमारी को छोड़ा? खाना पीना छोड़ना अर्थात् कई बीमारियाँ से छूटना। मुक्त हो गये ना। और ही हैल्थ वैल्थ दोनों मिल गई। इसलिए सनाया कि पक्के व्यापारी हो। विदेशी बच्चों की और एक विशेषता यह देख्भ् कि जिस तरफ भी लगते हैं तो बहुत तीव्रगति से उस तरफ चलते हैं। तीव्रगति से चलने के कारण प्राप्ति भी सर्व प्रकार की फुल करने चाहते हैं। बहुत फास्ट चलने के कारण कभी कभी चलते चलते थोड़ी सी भी माया की रूकावट आती है तो घबराते भी फास्ट हैं। यह क्या हुआ। ऐसे भी होता है क्या। ऐसे आश्चर्य की स्थिति में पड़ जाते हैं। फिर भी लगन मजबूत होने के कारण विघ्न पार हो जाता है और आगे के लिए मजबूत बनते जाते हैं। मंजिल पर चलने में महावीर हो, नाजुक तो नहीं हो ना। घबराने वाले तो नहीं हो? ड्रामा तो बहुत अच्छा करते हो। ड्रामा में माया को भगान के साधन भी बहुत अच्छे बनाते हो। तो इस बेहद के ड्रामा अन्दर प्रैक्टिकल में भी ऐसे ही महावीर पार्टधारी हो ना? मुहब्बत और मेहनत , दोनों में से मुहब्बत में रहते हो वा मेहनत में? सदा बाप की याद में समाये हुए रहते हो वा बार बार याद करने वाले हो वा याद स्वरूप हो? सदा साथ रहते हो वा सदा साथ रहें, इसी मेहनत में लगे रहते हो? बाप समान बनने वाले सदा स्वरूप रहते हैं। याद स्वरूप, सर्वगुण स्वरूप, सर्व शक्तियों स्वरूप। स्वरूप का अर्थ ही है अपना रूप ही वह बन जाये। गुण वा शक्ति अलग नहीं हो। लेकिन रूप में समाये हुए हों। जैसे कमजोर संस्कार वा कोई अवगुण बहुत काल से स्वरूप बन गये हैं, उसको धारण करने की कोई मेहनत नहीं करते हो लेकिन नेचर और नैचुरल हो गये हैं। उनको छोड़ने चाहते हो, महसूस करते हो

या नहीं होना चाहिए लेकिन समय पर फिर से न चाहते भी वह नेचर वा नैचरल संस्कार अपना कार्य कर लेते हैं। क्योंकि स्वरूप बन गये हैं। ऐसे हर गुण हर शक्ति निजी स्वरूप बन जाए। मेरी नेचर और नैचुरल गुण बाप समान बन जाएँ। ऐसा गुण स्वरूप, शक्ति स्वरूप, याद स्वरूप हो जाता है। इसको ही कहो जाता है बाप समान। तो सब अपने को ऐसे स्वरूप अनुभव करते हो? लक्ष्य तो यही है ना। पाना है तो फुल पाना या थोड़े में भी राजी हो? चन्द्रवंशी बनेंगे? (नहीं) चंद्रवंशी राजय भी कम थोड़े ही है। सूर्यवंशी कितने बनेंगे? जो भी सब बैठे हैं सूर्यवंशी बनेंगे? राम की महिमा कम तो नहीं है। उमंग उत्साह सदा श्रेष्ठ रहे यह अच्छा है।

अब विश्व की आत्मायें आप सबसे क्या चाहती हैं वह जानते हो? अभी हर आत्मा अपने पूज्य आत्माओं को प्रत्यक्ष रूप में पाने के लिए पुकार रही है। सिर्फ बाप को नही पुकार रहे हैं। हरेक समझते हैं हमारा पैगम्बर कहो, मैसेन्जर कहो, देव आत्मा कहो वह आवे और हमें साथ ले चले। यह विश्व की पुकार पूर्ण करने वाले कौन हैं?

आप पूज्य देव आत्माओं का इन्तजार कर रहे हैं कि हमारे देव आयेंगे, हमें जगायेंगे और ले जायेंगे। उसके लिए क्या तैयारी कर रहे हो? हमें जगायेंगे और ले जायेंगे। उसके लिए क्या तैयारी कर रहे हो? इस कानफ्रेंसके बाद देव प्रत्यक्ष होंगे अभी कानफ्रेंस के पहले स्वयं को श्रेष्ठ आत्मा प्रत्यक्ष करने का स्वयं और संगठित रूप से प्रोग्राम बनाओ। इस कानफ्रेंस द्वारा निराशा से आशा अनुभव होनी चाहिए। वह दीपक तो उद्घाटन में जगायेंगे, नारियल भी तोड़ेंग। साथ-साथ सर्व आत्माओं प्रति शुभ आशाओं का दीपक भी जगायेंगे। ठिकाना दिखाने का ठका हो जाए। जैसे नारियल का ठका करते हो ना। तो विदेशी चाहे भारतवासी दोनों को मिलकर ऐसी तैयारी पहले से करनी है। तब है महातीर्थ की प्रत्यक्षता। प्रत्यक्षता की किरण अब्बा के घर से चारों ओर फैले। जैसे कहते भी हो कि आबू विश्व के लिए लाइट हाउस है। यही लाइट अन्धकार के बीच नई जागृति का अनुभव करावे। इसके लिए ही सब आये हो ना। वा सिर्फ स्वयं रिफ्रेश हो चले जायेंगे?

सर्व ब्राहमणों का एक संकल्प, वही कार्य की सफलता का आधार है। सबको सहयोग चाहिए। किले की एक ईट भी कमजोर होती तो किले को हिला सकती है। इसलिए छोटे बड़े सब इस ब्राहमण परिवार के किले की ईट हो तो सभी को एक ही संकल्प द्वारा कार्य को सफल करना है। सबके मन से यह आवाज निकले कि यह मेरी जिम्मेवारी है। अच्छा – जितना बच्चे याद करते हैं उतना बाप भी याद प्यार देते हैं। अच्छा –

ऐसे सदा दृढ़ संकल्प करने वाले, सफलता के जन्म-सिद्ध अधिकार कोसाकर में लाने वाले, सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में रखते हुए समर्थ रहने वाले, स्वंय की विशेषता को सदा कार्य में लगाने वाले, सदा हर कार्य में बाप का कार्य सो मेरा कार्य ऐसे अनुभव करने वाले, सर्व कार्य में ऐसे बेहद की स्थिति में स्थित रहने वाले विशाल बुद्धि बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।''

ब्राजील पार्टी से :–

देश में सबसे दूर लेकिन दिल के समीप रहने वाली आत्मायें हों ना। सदा अपने को दूर बैठे भी बाप के साथ अनुभव करते हो ना। आत्मा उड़ता पंछी बन सेकण्ड में बाप के वतन में, मधुबन में पहुँच जाती है ना। सदा सैर करते हो? बापदादा बच्चों की मुहब्बत को देख रहे हैं कि कितनी दिल से साकार रूप में मधुबन में पहुँचने का प्रयत्न कर पहुँच गये हैं। इसके लिए मुबारक देते हैं। बापदादा आगे के लिए सदा विजयी रहो और सदा औरों को भी विजयी बनाओ यही वरदान देते हैं। अच्छा –

6.1.83

## निरंतर सहज योगी बनने की सहज युक्ति

याद औरसेवा की धुन में लगाने वाले, सदा स्नेह के बन्धन में बाँधने वाले माता-पिता अपने सिकीलधे बच्चों प्रति बोले :–

आज बागवान अपने वैरायटी खुशबूदार फूलों के बगीचे को देख हर्षित हो रहे हैं। बापदादा वैरायटी रूहानी पुष्पों की खुशबू और रूप की रंगत देख हरेक की विशेषता के गीत गा रहे हैं। जिसको भी देखो हरेक एक दो से प्रिय और श्रेष्ठ है। नम्बरवान होते हुए भी बापदादा के लिए लिस्ट नम्बर भी अति प्रिय है। क्योंकि चाहे अपनी यथा शक्ति मायाजीत बनने में कमजोर है फिर भी बाप को पहचान दिल से एक बार भी 'मेरा बाबा' कहा तो बापदादा रहम के सागर ऐसे बच्चे को भी एक बार रिर्टन में पदमगुणा उसी रुहानी प्यार से देखते कि मेरे बच्चे विशेष आत्मा हैं। इसी नजर से देखते हैं फिर भ् बाप का तो बना ना। तो बापदादा ऐसे बच्चे को भी रहम और स्नेह की दृष्टि द्वारा आगे बढ़ाते रहते हैं क्योंकि 'मेरा' है। यही रूहानी मेरे-पन की स्मृति ऐसे बच्चों के लिए समर्थी भरने की आशीर्वाद बन जाती है। बापदादा को मुख से आशीर्वाद देने की आवश्यकता नहीं पड़ती। क्योंकि शब्द, वाणी सेकेण्ड नम्बर है लेकिन स्नेह का संकल्प शक्तिशाली भी है और नम्बरवन प्राप्ति का अनुभव कराने वाला है। बापदादा इसी सूक्ष्म स्नेह के संकल्प से मात पिता दोनों रूप से हर बच्चे की पालना कर रहे हैं। जैसे लौकिक में सिकीलधे बच्चे की माँ बाप गुप्त ही गुप्त बहुत शक्तिशाली चीजों से पालना करते हैं। जिसको आप लोग खोरश (खातिरी) कहते हो। तो बापदादा भी वतन में बैठे सभी बच्चों की विशेष खोरश (खातिरी) करते रहते हैं। जैस मधुबन मं आते हो तो विशेष खोरश (खातिरी) होती है ना। तो बापदादा भी वतन में

हर बच्चे को फरिश्ते आकारी रूप में आहवान कर सम्मुख बुलाते हैं और अधिकारी रूप में अपने संकल्प द्वारा सूक्ष्म सर्व शक्तियों की विशेष बल भरने की खातिरी करते हैं। एक है अपने पुरुषार्थ द्वारा शक्ति की प्राप्ति करना। यह है मात-पिता के स्नेह की की पालना के रूप में विशेष खातिरी करना। जैसे यहाँ भी किस-किस की खातिरी करते हो। नियम प्रमाण रोज़ के भोजन से विशेष वस्तुओं से खातिरी करते हो ना। एकस्ट्रा देते हो। ऐसे ब्रह्मा माँ का भी बच्चों में विशेष स्नेह है। ब्रह्मा माँ वतन में भी बच्चों को रिमझिम बिना नहीं रह नहीं सकते। रूहानी ममता है। तो सूक्ष्म स्नेह के आहवान से बच्चों के स्पेशल ग्रुप इमर्ज करते हैं। जैसे साकार में याद हैं ना हर ग्रुप के विशेष स्नेह के स्वरूप में अपने हाथों से खिलाते थे और बहलाते थे। वही स्नेह का संस्कार अब भी प्रैक्टिकल मं चल रहा है। इसमें सिर्फ बच्चों को बापसमान आकारी स्वरूपधारी बन अनुभव करना पड़े। अमृतवेले ब्रहमा माँ ''आओ बच्चे, आओ बच्चे''कह विशेष शक्तियों की खुराक बच्चों को खिलाते हैं। जैसे यहाँ घी पिलाते थे और साथ-साथ एक्स-रसाइज भी कराते थे ना। तो वतन में भी घी भी पिलाते अर्थात् सूक्ष्म शक्तियों की (ताकत की ) चीजें देते और अभ्यास की एक्स-रसाइज भी कराते हैं। बुद्धि बल द्वारा सैर भी कराते हैं। अभी-अभी परमधाम, अभी-अभी सूक्ष्मवतन। अभी-अभी साकारी सृष्टि ब्राहमण जीवन। तीनों लोकों में दौड़ की रेस कराते हैं। जिससे विशेष खातिरी जीवन में समा जाए। तो सुना ब्रहमा माँ क्या करते हैं।

डबल विदेशी बच्चों को वैसे भी छुट्टी के दिनों में कहाँ दूर जाकर एक्सकरशन करने की आदत हैं। तो बापदादा भी डबल विदेशी बच्चों को विशेष निमंत्रण दे रहे हैं। जब भी फ्री हो तो वतन में आ जाओ। सागर के किनोर मिट्टी में नहीं जाओ। ज्ञान सागर के किनारे आ जाओ। बिगर खर्चे के बहुत प्राप्ति हो जायेगी। सूर्य की किरणें भी लेना चन्द्रमा की चाँदनी भी लेना, पिकनिक भी करना और खेल कूद भी करना। लेकिन बुद्धि रूपी विमान में आना पड़ेगा। सबका बुद्धि रूपी विमान एवररेडी हैं ना। संकल्प रूपी स्विच स्टार्ट किया और पहुँचे। विमान तो सबके पास रेडी है ना कि कभी-कभी स्टार्ट नहीं होता है वा पेट्रोल कम होता आधा में लौट आते। वैसे तो सेकण्ड में पहुँचने की बात है। सिर्फ डबल रिफाइन पेट्रोल की आवश्यकता है। डबल रिफाइन पेट्रोल कौन सा है? एक है निराकारी निश्चय कानशा कि मैं आत्मा हूँ, बाप का बच्चा हूँ। दूसरा है साकार रूप में सर्व सम्बन्धों का नशा। सिर्फ बाप ओर बच्चे के सम्बन्ध का नशा नहीं। लेकिन प्रवृति मार्ग पवित्र परिवार है। तो बाप से सर्व सम्बन्धों के रस कानशा साकार रूप में चलते फिरते अनुभव हो। या नशा और खुशी निरंतर सहज योगी बना देती है। इसलिए निराकारी और साकारी डबल रिफाइन साधन की आवश्यकता है।

अच्छा – आज तो पार्टियों से मिलना है इसलिए फिर दुबारा साकारी और निराकारी नशे पर सुनायेंगे। डबल विदेशी बच्चों को सर्विस के प्रत्यक्ष फल की, आज्ञा पालन करने की विशेष मुबारक बापदादा दे रहे हैं। हरेक ने अच्छा बड़ा ग्रुप लाया है। बापदादा के आगे अच्छे ते अच्छे बड़े गुलदस्ते भेंट किये हैं। उसके लिए बापदादा ऐसे वफादार बच्चों को दिल व जान सिक व प्रेम से यही वरदान दे रहे हैं –

''सदा जीते रहो – बढ़ते रहो''

अच्छा – चारों ओर के स्नेही बच्चों को, जो चारों ओर याद और सेवा की धुन में लगे हुए हैं, ऐसे बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बने हुए सिकीलधे बच्चों की सेवा के रिर्टन में प्यार और याद के रिर्टन में अविनाशी याद। ऐसे अविनाशी लगन में रहने वालों को अविनाशी याद प्यार और नमस्ते।''

आस्ट्रेलिया पार्टी से – आस्ट्रेलिया निवासी बच्चों की विशेषता बापदादा देख रहे हैं। आस्ट्रेलिया निवासियों की विशेषता क्या है, जानते हो? (पहली बार आये हैं इसलिए नहीं जानते हैं) नये स्थान पर आये हो वा अपने पहचाने हुए स्थान पर आये हो? यहाँ पहुँ-चने से कल्प पहले की स्मृति इतनी स्पष्ट हो जाती है जैसे इस जन्म में भी अभी-अभी देखा है। यही निशानी है समीप आत्मा की। इसी अनुभव द्वारा ही अपने को जान सकते हो कि हम ब्राहमण आत्माओं में भी समीप की आत्मा हैं वा दूर की आत्मा है। फर्स्ट नम्बर है या सेकण्ड नम्बर हैं। यही इस अलौकिक सम्बन्ध में विशेषता है जो हरेक समझता है कि मैं फर्स्ट जाऊंगा। लौकिक में तो नम्बरवान समझेंगे यह बड़ा है, दूसरा नम्बर, यह तीसरा नम्बर है। लेकिन यहाँ लास्टर वाला भी समझता है कि मैं लास्ट सो फर्स्ट हूँ। यही लक्ष्य अच्छा है। फर्स्ट आना ही है। तो फर्स्ट की निशानी-सदा बाप के साथ रहना। प्रयत्न नहीं करना है लेकिन सदा साथ का अनुभव रहे। जब यह अनुभव हो जाता है कि मेरा बाबा है, तो जो मेरा होता है वह स्वत: ही याद रहता है याद किया नहीं जाता है। मेरा अर्थात् अधिकार प्राप्त हो जाना। ''मेरा बाबा और मैं बाबा का'' कितने थोड़े से शब्द हैं और सेकण्ड की बात हैं। इसको ही कहा जाता है सहजयोगी। आपके बोर्ड में भी सहज राजयोग केन्द्र लिखा हुआ है ना। तो ऐसा ही सहज योग सीखे हो? माया आती है? बाप के साथ रहनेवाले के सामने माया आ नहीं सकती। जैसे अपनी शरीर के रहने वाले के सामने माया आ नहीं सकती। जैसे अपने शरीर के रहने का स्थान मालूम है, बना हुआ तो जब भी फ्री होते हो तो सहज ही अपने घर में जाकर रेस्ट करते हो। इसी रीति से जब मालूम है कि मुझे बाप के पास रहना है, यही ठिकाना है तो कार्य करते भी रह सकते हो। ऐसे बुद्धि द्वारा अनुभव हो।

हरेक अपनी तकदीर बना कर, तकदीर बनाने वाले के सामने पहुँच गये। बापदादा हरेक की तकदीर का सितारा चमकताहुआ देख रहे हैं। वैरायटी ग्रुप है। बच्चे भी हैं, बुजुर्ग भी हैं यूथ भी हैं। लेकिन अभी तो सब छोटे बच्चे बने गये। अभी कोई कहेंगे ८ मास के हैं, कोई १२ मास के। अलौकिक जन्म का ही वर्णन करेंगे ना। अच्छा – सभी कल्प पहले वाली सिकीलधे आत्मायें हों। सदा बाप के अटूट लगन में मगन रहते हुए आगे बढ़ते चलो। यह अटूट याद ही सर्व समस्याओं को हलकर उड़ता पंछी बनाए उड़ती कला में ले जायेगी। बापदादा के दिलतख्तनशीन रहते हुए सदा इसी नशे में रहो कि हम कल्प-कल्प के अधिकारी हैं। कल्प-कल्प अपना अधिकार लेते रहेंगे।

9.1.83

## व्यर्थ को छोड़ समर्थ संकल्प चलाओ

सर्व खजानों से भरपूर करने वाले, पदमापदम, भाग्यशाली बनाने वाले शिवबाबा बोले :–

''आज बापदादा सभी सिकीलधे बच्चों से मिलन मनाने के लिए विशेष आये हैं। डबल विदेशी बच्चे मिलने मनाने के लिए सदा इन्तजार में रहते हैं। तो आज बापदादा डबल विदेशी बच्चों से एक एक की विशेषता की रूह-रूहाण करने आये हैं। एक-एक स्थान की अपनी-अपनी विशेषता है। कहाँ संख्या ज्यादा और कहाँ संख्या कम होते भी अमूल्य रतन, विशेष रतन थोड़े चुने हुए होते भी अपना बहुत अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। ऐसे बच्चों के उमंग उत्साह को देख, बच्चों की सेवा को देख बाप दादा हर्षित होते हैं। विशेष रूप में विदेश के चारों ही कोनों में बाप को प्रत्यक्ष करने के प्लैन प्रैक्टिकल करने में अच्छी सफलता को पा रहे हैं। सर्व धर्मो की आत्माओं को बाप से मिलाने का प्रयत्न अच्छा कर रहे हैं। सेवा की लगन अच्छी है। अपनी भटकती हुई आत्मा को ठिकाना मिलने के अनुभवी होने के कारण औरों के प्रति भी रहम आता है। जो भी दूर-दूर से आये हैं उन्हों काएक ही उमंग है कि जाना है और अन्य को भी ले जाना है। इस दृढ़ संकल्प ने सभी बच्चों को दूर होते भी नजदीक काअनुभव कराया है। इसलिए सदा अपने को बापदादा के वर्से के अधिकारी आत्मा समझ चल रहे हैं।

कभी भी किसी व्यर्थ संकल्प के आधार पर अपने को हलचल में नहीं लाओ। कल्प-कल्प के पात्र हो। अच्छा – आज तो पार्टियों से मिलना है। पहला नम्बर मिलने का चान्स अमेरिका पार्टी को मिला है। तो अमेरिका वाले सभी मिलकर सेवा में सबसे नम्बरवन कमाल भी तो दिखायेंगे ना। अभी बाप दादा देखेंगे कि कानफ्रेंस में सबसे बड़े ते बड़े वी.आई.पी. कौन ले आते हैं। नम्बरवन वी.आई.पीॠ कहाँ से आ रहा है? (अमेरिका से) वैसे तो आप बाप के बच्चे वी.वी.वी.आई.पी. हो। आप सबसे बड़ा तो कोई भी नहीं है लेकिन जो इस दुनिया के वी.आई.पी. हैं उन आत्माओं को भी सन्देश देने का यह चान्स है। इन्हों का भाग्य बनाने के लिए यह पुरुषार्थ करना पड़ता है क्योंकि वे तो अपने को इस पुरानी दुनिया के बड़े समझते हैं ना। तो छोटे-छोटे कोई प्रोग्राम में आना वह अपना रिगार्ड नहीं समझते। इसलिए बड़े प्रोग्राम में बड़ों को बुलाने का चान्स है। वैसे तो बापदादा बच्चों से ही मिलते और रूह-रूहान करते। विशेष आते भी बच्चों के लिए ही हैं। फिर ऐसे-ऐसे लोगों का भी उल्हना न रह जाए कि हमें हमारे योग्य निमंत्रण नहीं मिला इस उल्हने को पुरा करने के लिए यह सब प्रोग्राम रचे जाते हैं। बापदादा को तो बच्चों से प्रीत है और बच्चों को बापदादा से प्रीत है। अच्छा –

सभी डबल विदेशी तन से और मन से सन्तुष्ट हो? थोड़ा भी किसको कोई संकल्प तो नहीं है। कोई तन की वा मन की प्राबल्म है? शरीर बीमार हो लेकिन शरीर की बीमारी से मन डिस्टर्ब न हो। सदैव खुशी में नाचते रहो तो शरीर भी ठीक हो जायेगार। मन की खुशी से शरीर को भी चलाओ तो दोनो एक्सरसाइज हो जायेंगी। खुशी है दुआ और एक्सरसाइज है दवाई। तो दुआ और दवा दोनों हाने से सहज हो जायेगा। (एक बच्चे ने कहा रात्रि को नींद नहीं आती है।) सोने के पहले योग में बैठो तो फिर नींद आ जायेगी। योग में बैठने समय बापदादा के गुणों के गीत गाओ। तो खुशी से दर्द भी भूल जायेगा। खुशी के बिना सिर्फ यह प्रयत्न करते हो कि मैं आत्म हूँ, मैं आत्मा हूँ, तो इस मेहनत के कारण दर्द भी फील होता है। खुशी में रहो तो दर्द भी भूल जायेगा।

कोई भी बात में किसको भी कोई क्वेशचन हो या छोटी सी बात में कब कनफ्यूज भी जल्दी हो जाते, तो वह छोटी-छोटी बातें फौरन स्पष्ट करके आगे चलते चलो। ज्यादा सोचने के अभ्यासी नहीं बनो। जो भी सोच आये उसको वहाँ ही खत्म करो। एक सोच के पीछे अनेक सोच चलने से फिर स्थिति और शरीर दोनों पर असर आता है। इसलिए डबल विदेशी बच्चों को सोचने की बात पर डबल अटेन्शन देना चाहिए। क्योंकि अकेले रहकर सोचने के नैचुरल अभ्यासी हो। तो वह अभ्यास जो पड़ा हुआ है, इसलिए यहाँ भी छोटी-छोटी बात पर ज्यादा सोचते। तो सोचने में टाइम वेस्ट जाता और खुशी भी गायब हो जाती। और शरीर पर भी असर आता है, उसके कारण फिर सोच चलता है। इसलिए तन और मन दोनों को सदा खुश रखने के लिए सोचो कम। अगर सोचना ही है तो ज्ञान रतनों को सोचो। व्यर्थ संकल्प की भेंट में समर्थ संकल्प चलता है कि मेरा पार्ट तो इतना दिखाई नहीं देता, योग लगता नहीं। अशरीरी होते नहीं। यह है व्यर्थ संकल्प। उनकी भेंट में समर्थ संकल्प करो, याद तो मेरा स्वधर्म है। बच्चे का धर्म ही है बाप को याद करना। क्यों नहीं होगा, जरूर होगा। मैं योगी नहीं तो और कौन बनेगा। मैं ही कल्प-कल्प कासहजयोगी हूँ। तो व्यर्थ के

बजाए इस प्रकार के समर्थ संकल्प चलाओ। मेरा शरीर चल नहीं सकता, व्यर्थ संकल्प नहीं चलाओ। इसके बजाए समर्थ संकल्प यह है कि इसी अन्तिम जन्म में बाप ने हमको अपना बनाया है। कमाल है, बलिहारी इस अन्तिम शरीर की। जो इस पुराने शरीर द्वारा जन्म-जन्म का वर्सा ले लिया। दिलशिकस्त के संकल्प नहीं करो। लेकिन खुशी से संकल्प करो। वाह मेरा पुराना शरीर । जिसने बाप से मिलाने के निमित्त बनाया। वाह वाह कर चलाओ। जैसे घोड़े को प्यार से, हाथ से चलाते हैं तो घोड़ा बहुत अच्छा चलता है अगर घोड़े को बार-बार चाबुक लगायेंगे तोऔर ही तंग करेगा। यह शरीर भी आपका है। इनको बार-बार ऐसे नहीं कहो कि यह पुराना, बेकार शरीर है। यह कहना जैसे चाबुक लगाते हो। खुशी-खुशी से इसकी बलिहारी गाते आगे चलाते रहो। फिर यह पुराना शरीर कब डिस्टर्ब नहीं करेगा। बहुत सहयोग देगा। (कोई ने कहा– प्रामिस भी करके जाते हैं, फिर भी माया आ जाती है।)

माया से घबराते क्यों हो? माया आती है आपको पाठ पढ़ाने लिए। घबराओ नहीं। पाठ पढ़ लो।कभी सहनशीलता का पाठ कभी एकरस स्थिति में रहने का पाठ पढ़ाती। कभी शान्त स्वरूप बनने का पाठ पक्का कराने आती। तो माया को उस रूप में नहीं देखो माया आ गई, घबरा जाते हो। लेकिन समझो कि माया भी हमारी सहयोगी बन, बाप से पढ़ा हुआ पाठ पक्का कराने के लिए आई है। माया को सहयोगी के रूप में समझो। दुश्मन नहीं। पाठ पक्का कराने के लिए सहयोगी है तो आपका अटेन्शन सारा उस बात में चला जायेगा। फिर घबराहट कम होगी और हार नहीं खायेंगे। पार्ठ पक्का करके अंगद के समान बन जायेंगे। तो माया से घबराओ नहीं। जैसे छोटे बच्चों को माँ बाप डराने के लिए कहते हैं, हव्वा आ जायेगा। आप सबने भी माया को हव्वा बना दिया है। वैसे माया खुद आप लोगों के पास आने में घबराती है। लेकिन आप स्वयं कमजोर हो, माया का आवहान करते हो। नहीं तो वह आयेगी नहीं। वह तो विदाई के लिए ठहरी हुई है। वह भी इन्तजार कर रही है कि हमारी लास्ट डेट कौन सी है? अब माया को विदाई देंगे या घबरायेंगे।

डबल विदेशियों की यह एक विशेषता है – उड़ते भी बहुत तेज हैं और फिर डरते हैं तो छोटी सी मक्खी से भी डर जाते हैं। एक दिन बहुत खुशी में नाचते रहेंगे और दूसरे दिन फिर चेहरा बदली हो जायेगा। इस नेचर को बदली करो। इसका कारण क्या है?

इन सब कारणों का भी फाउन्डेशन है – सहनशक्ति की कमी। सहन करने के संस्कार शुरू से नहीं है, इसलिए जल्दी घबरा जाते हो। स्थान को बदलेंगे या जिन से तंग होंगे उनको बदल लेंगे। अपने को नहीं बदलेंगे। यह जो संस्कार है वह बदलना है। ''मुझे अपने को बदलना है''स्थान को वा दूसरे को नहीं बदलना है लेकिन अपने को बदलना है। यह ज्यादा स्मृति में रखो, समझा। अब विदेशी से स्वदेशी संस्कार बना लो। सहनशीलता का अवतार बन जाओ। जिसको आप लोग कहते हो अपने को एडजस्ट करना है। किनारा नहीं करना है, छोड़ना नहीं है।

हंस और बगुले की बात अलग है। उन्हों की आपस में खिट खिट है। वह भी जहाँ तक हो सके उसके प्रति शुभ भावना से ट्रायल करना अपना फर्ज है। कई ऐसे भी मिसाल हुए हैं जो बिल्कुल एन्टी थे लेकिन शुभभावना से निमित्त बनने वाले से भी आगे जा रहे हैं। तो शुभभावना फुल फोर्स से ट्रायल करनी चाहिए।

अगर फिर भी नहीं होता है तो फिर डायरेक्शन लेकर कदम उठाना चाहिए क्योंकि कई बार ऐसे किनारा कर देने कहाँ डिससर्विस भी हो जाती है। और कई बार ऐसा भी होता है कि आने वाली ब्राहमण आत्मा की कमी होने के कारण अन्य आत्मायें भी भाग्य लेने से वंचित रह जाती हैं। इसलिए पहले स्वयं ट्रायल करो फिर अगर समझते हो यह बड़ी प्राबलम है तो निमित्त बनी आत्माओं से वेरीफाय कराओ। फिर वह भी अगर समझती हैं कि अलग होना ही ठीक है फिर अलग हुए भी तो आपके ऊपर जवाबदारी नहीं रही। आप डायरेक्शन पर चले। फिर आप निश्चिन्त। कई बार ऐसा होता है – जोश में छोड़ दिया, लेकिन अपनी गलती के कारण छोड़ने के बाद भी वह आत्मा खींचती रहती है। बुद्धि जाती रहती है यह भी बड़ा विघ्न बन जाता है। तन से अलग हो गये लेकिन मन का हिसाब किताब होने के कारण खींचता रहता इसलिए निमित्त बनी हुई आत्माओं से वेरीफाय कराओ। क्योंकि यह कर्मों की फिलासफी है। जबरदस्ती तोड़ने से भी मन बार-बार जाता रहता है। कर्म की फिलासफी को ज्ञान स्वरूप होकर पहचानों और फिर वेरीफाय कराओ। फिर कर्म बन्धन को ज्ञान युक्त होकर खत्म करो।

बाकी ब्राहमण आत्माओं में जब हम शरीर होने के कारण ईर्ष्या उत्पन्न होती है,ईर्ष्या के कारण संस्कारों का टक्कर होता है लेकिन इसमें विशेष बात यह सोचो कि जो हमशरीक हैं उसको निमित्त बनाने वाला कौन? उनको नहीं देखो फलाना इस डियुटी पर आ गया, फलानी टीचर हो गई, नम्बरवन सर्विसएबुल हो गई। लेकिन यह सोचो कि उस आत्म को निमित्त बनाने वाला कौन? चाहे निमित्त बनी हुई विशेश आत्मा द्वारा ही उनको डियुटी मिलती है लेकिन निमित्त बनने वाली टीचर को भी निमित्त किसने बनाया? इसमें जबबाप बीच में हो जायेगा तोमाया भाग जायेगी। ईर्ष्या भाग जायेगी लेकिन जैसे कहावत है ना – या होगा बाप या होगा पाप। जब बाप को बीच से निकालते हो तब पाप आता है। ईर्ष्या भी पाप कर्म है ना। अबर समझो बाप ने निमित्त बनाया है तो बाप जो कार्य करते उसमें कल्याण ही है। अगर उसकी कोई ऐसी बात अच्छी न भी लगती है, रांग भी हो सकती है, क्योंकि सब पुरुषार्थी

हैं। अगर रांग भी है तो अपनी शुभभावना से ऊपर दे देना चाहिए। ईर्ष्या के वश नहीं। लेकिन बाप की सेवा सो हमारी सेवा है – इस शुभभावना से, श्रेष्ठ जिम्मेवारी से ऊपर बात दे देनी चाहिए। देने के बाद खुद निश्चिन्त हो जाओ। फिर यह नहीं सोचो कि यह बात दी फिर क्या हुआ। कुछ हुआ नहीं। हआ वा नहीं यह जिम्मेवारी बडों की हो जाती है। आपने शुभ भावना से दी, आपका काम है अपने को खाली करना। अगर देखते हो बडों के ख्याल में बात नहीं आई तो भल दुबारा लिखो। लेकिन सेवा की भावना से। अगर निमित्त बने हुए कहते हैं कि इस बात को छोड़ दो तो अपना संकल्प और समय व्यथ नहीं गंवाओ। ईर्ष्या नहीं करो। लेकिन किसका कार्य है, किसने निमित्त बनाया है, उसको याद करो। किस विशेषता के कारण उनको विशेष बनाया गया है वह विशेषता अपने में धारण करो तो रेस हो जायेगी न कि रीस। समझा।

अपसेट कभी नहीं होना चाहिए। जिसने कुछ कहा उनसे ही पूछना चाहिए कि आपने किस भाव से कहा – अगर वह स्पष्ट नहीं करते तो निमित्त बने हुए से पूछो कि इसमे मेरी गलती क्या है। अगर ऊपर से वेरीफाय हो गया, आपकी गलती नहीं है तो आप निश्चिन्त हो जाओ। एक बात सभी को समझनी चाहिए कि ब्राहमण आत्माओं द्वारा यहाँ ही हिसाब किताब चुक्तू होना है। धर्मराजपुरी से बचने के लिए ब्राहमण कहाँ न कहाँ निमित्त बन जाते हैं। तो घबराओ नहीं कि यह ब्राहमण परिवार में क्या होता है। ब्राहमणों काहि-साब किताब ब्राहमणों द्वारा ही चुक्तू होना है। तो यह चुक्तू हो रहा है इसी खुशी में रहो। हिसाब किताब चुक्तू हुआ और तरक्की ही तरक्की हुई। अभी एक वायदा करो – कि छोटी-छोटी बात में कनफ्यूज नहीं होंगे, प्राबलम नहीं बनेंगे लेकिन प्राबलम को हल करने वाले बनेंगे। समझा।

अमेरिका पार्टी से – आप सब बापदादा के सिर के ताज, श्रेष्ठ आत्मायें हो ना। श्रेष्ठ आत्माओं को हर संकल्प, हर बोल श्रेष्ठ होगा। कभी कभी नहीं सदा। क्योंकि सदा कावर्सा पा रहे हो ना। तो जब सदा का वर्सा पाने के अधिकारी हो तो स्थिति भी सदाकाल की। 'सदा' शब्द को सदा याद रखना। यही वरदान सभी बच्चें को बापदादा देते हैं। सदा खुश रहेंगे, सदा उड़ती कला में रहेंगे, सदा सर्व खजानों से सम्पन्न रहेंगे। ऐसे वरदान लेने वाली आत्मायें सहजयोगी स्वत: हो जाती हैं। आज खुशी का दिन है? सबसे अधिक खुशी किसको है, बाप को है या बच्चों को है? (बच्चों को है) बापदादा को यह खुशी है कि ऐसा कोई बाप सारे वर्ल्ड में नहीं होगा जिसका हरेक बच्चा श्रेष्ठ हो। बापदादा एक एक बच्चे की अगर विशेषता का वर्णन करें तो कई वर्ष बीत जाएं। हरेक बच्चे की महिमा के बड़े बड़े शास्त्र बन जाएं विशेष आत्मा हो – ऐसा निश्चय हो तो सदा मायाजीत स्वत: हो जायेंगे।

मैक्सिको ग्रुप से – जितना दूर है उतना दिल से समीप हो? ऐसा अनुभव करते हो ना? सभी ने अपनी सीट बापदादा का दिलतख्त रिजर्व कर लिया है? बाप दादा एक एक रतन की वैल्यु को जानते हैं। एक-एक रतन स्थापना के कार्य को सफल करने के निमित्त है। तो अपने को इनते अमूल्य रतन समझते हो? कितनी भाग्यवान आत्मायें हो जो इतनी दूर से भी बाप ने ढूंढ कर अपना बनाया है। आज की दुनिया में जो बड़े बडे विद्वान, आचार्य हैं, उन्हों से आप पदमगुणा अधिक भाग्यववान हो। बस इसी खुशी मे रहो कि जो जीवन में पाना था वह पा लिया। न्यूजीलैण्ड – न्यू लैण्ड बना रहे हो ना? स्वयं को भी नया बनाया तो विश्व को भी नया बनायेंगे ना। अपना आक्यूपेशन यही सुनाते और लिखते हो ना कि हम सभी विश्व का नव निर्माण करने वाले हैं। तो जहाँ रहते हो उसको तो नया बनायेंगे ना। हरेक स्थान की अपनी विशेषता है। न्यूजीलैण्उ की विशेषता क्या है। न्यूजीलैण्ड में गये हुए भारतवासियों ने फिर से भारत के श्रेष्ठ भाग्य बनाने वाले बाप को पहचान लिया है। भारत में रहते भारतवासी बच्चों ने नहीं जाना लेकिन विदेश में रहते भारत की महिमा को और बाप को जान लिया। न्यूजीलैण्ड में भारत के बिछड़े हुए बच्चे अच्छे अच्छे निकले हैं। टीचर्स पीछे मिली हैं। लेकिन सर्विस की स्थापना पहले की। इसलिए हिम्मत वाले बच्चे, उमंग उल्लास वाले बच्चे विशेष हैं। समझा।

जर्मन और हेमबर्ग – सभी बापदादा के अमूल्य रतन हो? कौन से रत्न हो और कहाँ रहते हो? मस्तक मणी हो? गले का हार हो या कंगन हो? (तीनों हैं) तो बापदादा के विशेष श्रृंगार हो गये ना। सभी को यह नशा है ना कि हम विश्व के विशेष के मालिक के बालक हैं। इसी नशे में खुशी में सदानाचते रहो। बाप के हाथ में हाथ है, बाप के साथ खुशी में सारा समय नाचो। बापदादा की कम्पनी और बाप दादा के परिवार के हो। अभी और कहाँ क्लब आदि में जाने की आवश्यकता नहीं। सदा चेहरे में ऐसी खुशी की झलक हो जो आपका चेयरफुल चेहरा बोर्ड का काम करे। इसमें स्वत: एडवरटाइज हो जायेगी। बापदादा को भी ग्रुप को देखकर के खुशी हो रही है। जिस भी स्थान पर रहते हो उस स्थान से बहुत चुने हुए रतन बापदादा ने जो निकाले हैं वह रतन यहाँ पहुंच गये। बापदादा की इलेक्शन में विशेष आत्मायें हो। इस इलेक्शन में मिनिस्टर आदि नहीं बनते लेकिन यहाँ तो विश्व महाराजा बनते हो।

11.1.83

## समर्थ की निशानी- संकल्प, बोल, कर्म, स्वभाव, संस्कार बाप समान

लन्डन ग्रुप के प्रति बापदादा बोले :–

''आज रूहानी बाप बच्चों से दिलाराम को दी हुई दिल का समाचार पूछने आये हैं। सभी ने दिलाराम को दिल दी है ना। जब एक दिलाराम कोदिल दे दी तो उसके सिवाए और कोई आ नहीं सकता। दिलाराम को दिल देना अर्थात् दिल में बसाना। इसी को ही

सहज योग कहा जाता हे। जहाँ दिल होगी वहाँ ही दिमार्ग भी चलेगा। तो दिल में भी दिलाराम और दिमाग में भी अर्थात् स्मृति में भी दिलाराम। और कोई भी स्मृति वा व्यक्ति दिलाराम के बीच आ नहीं सकता – ऐसा अनुभव करते हो? जब दिल और दिमाग अर्थात् स्मृति, संकल्प, शक्ति सब बाप को दे दी, तो बाकी रहा ही क्या। मन, वाणी और कर्म से बाप को दे दी, तो बाकी रहा ही क्या। मन, वाणी और कर्म से बाप के हो गये। संकल्प भी यह किया कि हम बाप के हैं और वाणी से भी यही कहते हो 'मेरा बाबा', मैं बाबा का। और कर्म में भी जो सेवा करते हो वह भी बाप कीसेवा वह मेरी सेवा – ऐसे ही मन, वाणी और कर्म से बाप के बन गये ना। बाकी मार्जिन क्या रही, जहाँ से कोई संकल्प मात्र भी आवे। कोई भीसंकल्प वा किसी प्रकार की भी आकर्षण आने का कोई दरवाजा वा खिड़की रह गई है क्या? आने का रास्ता हैं ही मन, बुद्धि, वाणी और कर्म – चारों तरफ चेक करो कि जरा भी किसको आने की मार्जिन तो नहीं है। मार्जिन है? ड्रीम्स (स्वप्न) भी इसी ही आधार पर आते हैं। जब बाप को एक बार कहा कि यह सब कुछ तेरा फिर बाकी क्या रहा? इसी को ही निरंतर याद कहा जाता है। कहने और करने में अन्तर तो नहीं कर देते हो? तेरा में मेरा मिक्स तो नहीं कर देते हो? सूर्यवंशी अर्थात् गोल्डन एजउ। उसमें मिक्स तो नहीं होगा ना। डाइमन्ड भी बेदाग हो। कोई दाग तो नहीं गया है।

जिस समय भी कोई कमजोरी वर्णन करते हो, चाहे संकल्प की, बोल की, चाहे संस्कार स्वभाव की, तो शब्द क्या कहते हो? मेरा विचार ऐसा कहता है। वा मेरा संस्कार ही ऐसा है। लेकिन जो बाप का संस्कार, संकल्प सो मेरा संस्कार, संकल्प। जब बाप जैसा संकल्प, संस्कार हो जाता है तोऐसे बोल कब नहीं बोलेंगे कि क्या करूँ, मेरा स्वभाव संस्कार ऐसा हे। कया करूँ, यह शब्द ही कमजोरी का है। समर्थ की निशानी है – सदा बाप समान संकल्प, बोल, कर्म, स्वभाव, संस्कार हो। बाप के अलग, मेरे अलग यह हो नहीं सकता। उनके संकल्प में, बोल में, हर बात में बाबा, बाबा शब्द नैचुरल होगा। औरकर्म करते करावनहार करा रहा है – यह अनुभव होगा। जब सब में बाबा आ गया तो बाप के आगे माया आ नहीं सकती। या बाप होगा या माया। लण्डन निवासी बाबा, बाबा कहते, स्मृति में रखते सदाकाल के लिए मायाजीत हो गये हैं। जब वर्सा सदाकाल का लेते हो तो याद भी सदाकाल की चाहिए ना। मायाजीत भी सदाकाल के लिए चाहिए।

लण्डन है सेवा का फाउन्डेशन स्थान। तो फाउण्डेशन के स्थान पर रहने वाले भी फाउन्डेशन के समान सदा मजबूत हैं। क्या करें, कैसे करें, ऐसी कोई भी कम्पलेन्ट तो नहीं है ना। बहुत करके ड्रामा भी माया के ही करते हो ना। हर ड्रामा में माया न आने वाली भी जाती है। माया के बिना शायद ड्रामा नहीं बना सकते हो। माया के भी भिन्न-भिन्न स्वरूप दिखाते हो ना। हर बात का परिवर्तक स्वरूप हो, इसका ड्रामा दिखाओ। माया का मुख्य स्वरूप क्या है, उसको तो अच्छी तरह से जानते हो। लेकिन मायाजीत बनने के बाद वही माया के स्वरूप कैसे बदल जाते हैं, वह ड्रामा दिखाओ। जैसे शारीरिक दृष्टि जिसको काम कहते, तो उसके बजाए आत्मिक स्नेह रूप में बदल जाता – ऐसे सब विकार परिवर्तक रूप में हो जाते। तो क्या परिवर्तन हुआ यह प्रैक्टिकल में अनुभव भी करो और दिखाओ भी।

लण्डन निवासियौं ने विशेष स्व की उन्नति प्रति और विश्व कल्याण प्रति कौन सा लक्ष्य रखा है? सभी को विशेष सदा यही स्मृति में रहे कि हम हैं ही फरिश्ते। फिरश्ते का स्वरूप कया, बोल क्या, कर्म क्या होता वह स्वत: ही फरिश्ते रूप से चलते चलेंगे। ''फरिश्ता हूँ, फरिश्ता हूँ'' – इसी स्मृति को सदा रखो। जबकि बाप के बन गये और सब कुछ मेरा सो तेरा कर दिया तो क्या बन गये। हल्के फरिश्ते हो गये ना। तो इस लक्ष्य को सदा सम्पन्न करने के लिए एक ही शब्द कि सब बाप का है, मेरा कुछ नहीं – यह स्मृति में रहे। जहाँ मेरा आवे तोवहाँ तेरा कह दो। फिर कोई बोझ नहीं फील होगा। हर वर्ष कदम आगे बढ़ रहा है और सदा आगे बढ़ते रहेंगे, उड़ती कला में जाने वाले फरिश्ते हैं यह तो पक्का है ना। नीचे ऊपर, नीचे ऊपर होने वाले नहीं। अच्छा – लण्डन निवासियों की महिमा तो सभी जानते हैं। आपको सब किस नजर से देखते हैं? सदा मायाजीत। क्योंकि पावरफुल डबल पालना मिल रही है। बापदादा की तो सदा पालना है ही लेकिन बाप ने जिन्हों को निमित्त बनाया है वह भी पावरफुल पालना मिल रही है। निराकार, आकार और साकार तीनों को फालो करो तो क्या बन जायेंगे? फरिश्ता बन जायेंगे ना। लण्डन निवासी अर्थात् नो कम्पलेन्ट, नो कन्फ्यूज। अलौकिक जीवन वाले, स्वराज्य करनेवाले सब किंग और क्वीन हो ना। आपका नशा है ना।''

कुमारियों से – कुमारियाँ तो अपना भाग्य देख सदा हर्षित होती हैं। कुमारी लौकिक जीवन में भी ऊंची गई जाती है और ज्ञान में तो कुमारी है ही महान। लौकिक में भी श्रेष्ठ आत्मायें और पारलौकिक में भी श्रेष्ठ आत्मायें। ऐसे अपने को महान समझती हो? आप तो 'हाँ' ऐसे कहो जो दुनिया सुने। कुमारियों को तो बापदादा अपने दिल की तिजोरी में रखता है कि किसी की भी नजर न लगे। ऐसे अमूल्य रतन हो। कुमारियाँ सदा पढ़ाई और सेवा इसी में ही बिजी रहती हैं। कुमारी जीवन में बाप मिल गया और चाहिए ही क्या। अनेक सम्बन्धों में भटकना नहीं पड़ा, बच गई। एक में सर्व सम्बन्ध मिल गये। नहीं तो पता है कितने व्यर्थ के सम्बन्ध हो जाते, सासू का, नंनद का, भाभियों का....सबसे बच गई ना। न जाल में फँसी, न जाल से छुड़ाने का समय ही था। कुमारियाँ तो हैं ही डबल लाइट। कुमारियाँ सदा बाप समान सेवाधारी और बाप समान सर्व धारणाओं स्वरूप। कुमारी जीवन अर्थात् प्युअर जीवन।

प्युअर आत्मायें श्रेष्ठ आत्मायें हुई ना। तो बापदादा कुमारियों को महान पूज्य आत्मा के रूप में देखते हैं। पवित्र आत्मायें सर्व की और बाप की प्रिय हैं।

अपने भाग्य को सदा सामने रखते हुए समर्थ आत्मा बन सेवा में समर्थी लाते रहो। यही बड़ा पुण्य है। जो स्वयं को प्राप्ति हुई है वह औरों को भी कराओ। खजानों को बाँटने से खजाना और ही बढ़ेगा – ऐसे शुभ संकल्प रखने वाली कुमारी हो ना। अच्छा –

टीचर्स के साथ :– विश्व के शोकेस में विशेष शोपीस हो ना। सबकी नजर निमित्त बने हुएसेवाधारी कहो, शिक्षक कहो, उन्हीं पर ही रहती है। सदा स्टेज पर हो। कितनी बड़ी स्टेज है। और कितने देखने वाले हैं। सभी आप निमित्त आत्माओं से प्राप्ति की भावना रखते हैं। सदा यह स्मृति में रहता है? सेन्टर पर रहती हो वा स्टेज पर रहती हो? सदा बेहद की अनेक आत्माओं के बीच बड़े ते बड़ी स्टेज पर हो। इसलिए सदा दाता के बच्चे देते रहो और सर्व की भावनायें सर्व की आशायें पूण करते रहो। महादानी और वर-दानी बनो, यही आपका स्वरूप है। इस स्मृति से हर संकल्प, बोल और कर्म हीरो पार्ट के समान हो क्योंकि विश्व की आत्मायें देख रही हैं। सदा स्टेज पर ही रहना, नीचे नहीं आना। निमित्त सेवाधारियों को बापदादा अपना फ्रैन्डस समझते हैं। क्योंकि बाप भी शिक्षक है तो बाप समान निमित्त बनने वाले फ्रैन्डस हुए ना। तो इतनी समीप की आत्मायें हो। ऐसे सदा अपने को बाप के साथ वा समीप अनुभव करती हो? जब भी बाबा कहो तो हजार भुजाओं के साथ बाबा आपके साथ है। ऐसे अनुभव होता है? जो निमित्त बने हुए हैं उन्हीं को बापदादा एकस्ट्रा सहयोग देते हैं। इसीलिए बड़े फखुर से बाबा कहो, बुलाओ, तो हाजिर हो जायेंगे। बापदादा तो ओबीडियन्ट हैं ना। अच्छा – ओम् शान्ति।

13.1.83

## स्वदर्शन चक्रधारी ही चक्रवर्ती राज्य भाग्य के अधिकारी

विश्व कल्याणकारी, वरदानी व महादानी, नजर से निहाल करने वाले बाबा बोले :–

''सभी अपने को स्वदर्शन चक्रधारी समझते हो? स्वदर्शन चक्रधारी ही भविष्य में चक्रवर्ती राज्य भाग के अधिकारी बनते हैं। स्वदर्शन चक्रधारी अर्थात् अपने सारे चक्र के अन्दर सर्व भिन्न-भिन्न पार्ट को जानने वाले। सभी ने यह विशेष बात जान ली कि हम सब इस चक्र के अन्दर हीरो पार्ट बजाने वाली विशेष आत्मायें हैं। इस अन्तिम जन्म में हीर-तुल्य जीवन बनाने से सारे कल्प के अन्दर हीरो पार्ट बजाने वाले बन जाते हौ। आदि से अन्त तक क्या क्या जन्म लिए हैं, सब स्मृति में हैं? क्योंकि इस समय नालेज-फुल बनते हो। इस समय ही अपने सभी जन्मों को जान सकते हो तो ५ हजार वर्ष की जन्म-पत्री को जान लिया। कोई भी जन्मपत्री बताने वाले अगर किसको सुनायेंगे भी तो दो चार छे जन्म का ही बतायेंगे। लेकिन आप सबको बापदादा ने सभी जन्मों की जन्मपत्री बतादी है। तो आप सभी मास्टर नालेजफुल बन गये ना। सारा हिसाब चित्रों में भी दिखा दिया है। तो जरूर जानते हो तब तो चित्रों में दिखाया है ना। अपनी जन्मपत्री का चित्र देखा है? उस चित्र को देख करके ऐसा अनुभव करते हो कि यह हमारी जन्मपत्री का चित्र है। वा समझते हो नालेज समझाने का चित्र है। यह तो नशा है ना कि हम ही विशेष आत्मयें सृष्टि के आदि से अन्त तक कापार्ट बजाने वाली हैं। ब्रह्मा बाप के साथ साथ सृष्टि के आदिपिता और आदि माता के साथ सारे कल्प में भिन्न-भिन्न पार्ट बजाते आये हो ना। ब्रह्मा बाप के साथ पूरे कल्प की प्रीत कीरीति निभाने वाले हो ना। निर्वाण जाने की इच्छा वाले तो नहीं हो ना। जिसने आदि नहीं देखी उसने क्या किया। आप सबने कितनी बार सृष्टि के आदि का सुनहरी दृश्य देखा है। वह समय वह राज्य, वह अपना स्वरूप, वह सर्व सम्पन्न जीवन, अच्छी तरह से याद है वा याद दिलाने की जरूरत है? अपने आदि के जन्म अर्थात् पहले जन्म और अब लास्ट के जन्म दोनों के महत्व को अच्छी तरह से जान लिया है ना। दोनों की महिमा अपरमपार है।

जैसे आदिदेव ब्रह्मा औरआदि आत्मा श्रीकृष्ण, दोनां का अन्तर दिखाते हो और दोनो को साथ-साथ दिखाते हो – ऐसे ही आप सब भी अपना ब्राहमण स्वरूप और देवता स्वरूप दोनों को सामने रखते हुए देखो कि आदि से अन्त तक हम कितनी श्रेष्ठ आत्मायें रही हैं। तो बहुत नशा और खुशी रहेगी। बनाने वाले और बनने वाले दोनों की विशेषता है। बापदादा सभी बच्चों के दोनों ही स्वरूप देखकर हर्षित होते हैं। चाहे नम्बरवार हो, लेकिन देव आत्मा तो सभी बनेंगे ना। देवताओं को पूज्य, श्रेष्ठ महान सभी मानते हैं। चाहे लास्ट नम्बर की देव आत्मा हो फिर पूज्य आत्म की लिस्ट में हैं। आधाकल्प राज्य भाग्य प्राप्त किया और आधाकल्प माननीय और पूज्यनीय श्रेष्ठ आत्मा बने। जो अपने चित्रों की पूजा, मान्यता चैतन्य रूप में ब्राहमण रूप से देव रूप की अभी भी देख रहे हो। तो इससे श्रेष्ठ और कोई हो सकता है। सदा इस स्मृति स्वरूप में स्थित रहो। फिर बार-बार नीचे की स्टेज से ऊपर की स्टेज पर जाने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

सभी जहाँ से भी आए हैं। लेकिन इस समय मधुबन निवासी हैं। तो सभी मधुबन निवासी सहज स्मृति स्वरूप बन गये हो ना। मधु-बन निवासी बनाना भी भाग्यवान की निशानी है। क्योंकि मधुबन के गेट में आना और वरदान को सदा के लिए पाना। स्थान का भी महत्व है। सभी मधुबन निवासी वरदान स्वरूप में स्थित हो ना। सम्पन्न-पन की स्टेज अनुभव कर रहे हो ना। सम्पन्न स्वरूप तो सदा खुशी में नाचते और बाप के गुण गाते। ऐसे खुशी में नाचते रहो जो आपको देखकर औरों काभी स्वत: खुशी में मन नाचते।

जैस स्थूल डाँस को देख दूसरे के अन्दर भी नाचने का उमंग उत्पन्न हो जाता है ना। तो सदा ऐसे नाचो और गाते रहो। अच्छा –
डबल विदेशी बच्चों को यह भी विशेष चान्स है क्योंकि अभी सिकीलधे हो। जब डबल विदेशियों को भी संख्या बहुत हो जायेगी तो फिर क्या करेंगे। जैसे भारतवासी बच्चों ने डबल विदेशियों को चान्स दिया है ना, तो आप भी ऐसे दूसरों को चान्स देंगेना। दूसरों की खुशी से अपनी खुशी अनुभव करना यही महादानी बनना है।''

पार्टियों के साथ अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

सिंगापुर पार्टी– सिंगापुर को बापदादा, बाप का श्रृंगार कहते हैं आप सब कौन सा श्रृंगार हो? मस्तक की मणि हो? मस्तकमणि अर्थात जिसके मस्तक में सदा बाप याद रहे। ऐसी मस्तक मणि हो। इसी कोही उंची स्टेज कहा जाता है। 'सदा अपने को ऐसी ऊंची स्टेज पर स्थित रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ' – ऐसे समझते हुए आगे बढ़ते रहो। इसी ऊंची स्टेज पर स्थित रहने वाले नीचे की अनेक प्रकार की बातों को ऐसे पार करेंगे जैसे कुछ है ही नहीं। समस्याएँ नीचे रहेंगी आप ऊपर होजायेंगे। सदा अपना मस्तकमणि का टाइटिल याद रखना। नीचे नहीं आना। सदा ऊपर। मस्तकमणि का स्थान ही ऊंचा मस्तक है। ऐसी श्रेष्ठ आत्मा हो। बापदादा ने विशेष श्रृंगार को चुन लिया है। अपने भाग्य को सदा स्मृति में रख आगे बढ़ते चलो। उड़ती कला में उड़ते और उड़ाते चलो। संग-मयुग है ही उड़ने और उड़ाने का युग। समय को वरदान प्राप्त है ना।

अफ्रीका पार्टी से – सदा के स्नेही और सदा के सहयोगी आत्मायें। स्नेह औरसहयोग के कारण अविनाशी रतन बन गये। अविनाशी बाप ने, बाप समान अविनाशी रतन बना दिया। ऐसे अविनाशी रतन जो किसी भी प्रकार से कोई हिला न सके। ऐसे अविनाशी रतन 'अमरभव' के वरदानी हो। रीयल गोल्ड हो ना। बाप के साथी – बाप का कार्य सो आपका कार्य। सदा साथ रहेंगे इसलिए अविनाशी रहेंगे।

सच्ची लगन विघ्नों को समाप्त कर देती है। कितनी भी रूकावटें आएं लेकिन एक बल एक भरोसे के आधार पर सफलता मिलती रही है और मिलती रहेगी, ऐसाअनुभव होता रहता है ना। जहाँ सर्व शक्तिवान बाप साथ है वहाँ यह छोटी छोटी बातें ऐसे समाप्त हो जाती हैं जैसे कुछ भी थी ही नहीं। असम्भव भी सम्भव हो जाता है क्योंकि सर्व शक्तिवान के बच्चे बन गए। 'मक्खन से बाल' समान सब बातें सिद्ध हो जाती हैं। अपने को ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान श्रेष्ठ आत्मायें अनुभव करते हो ना। कमजोरी तो नहीं आती। बाप सर्वशक्तिवान हैं, तो बच्चों को बाप अपने से भी आगे रखते हैं। बाप ने कितना ऊंच बनाया है, क्या क्या दिया है – इसी कासिमरण करते-करते सदा हर्षित और शक्तिशाली रहेंगे।

ट्रिनीडाड, ग्याना – सदा अपने को बाप समान सर्वगुण, सर्वशक्तियों से सम्पन्न आत्मा हैं – ऐसे अनुभव करते हो? बाप के बच्चे तो सदा हो ना। जब बच्चे सदा हैं तो बाप समान धारणा स्वरूप भी सदा चाहिए ना। यही सदा अपने आप से पूछो कि बाप के वर्से की अधिकारी आत्मा हूँ। अधिकारी आत्मको अधिकार कभी भूल नहीं सकता। जब सदा का राज्य पाना है तो याद भी सदा की चाहिए।

हिम्मत रखकर, निर्भय होकर आगे बढ़ते रहे हो इसलिए मदद मिलती रही है। हिम्मत की विशेषता से सर्व का सहयोग मिल जाता है। इसी एक विशेषता से अनेक विशेषताएँ स्वत: आती जाती हैं। एक कदम आगे रखा और अनेक कदम सहयोग के अधिकारी बने इसलिए इसी विशेषता का औरों को भी दान और वरदान देते आगे बढ़ाते रहो। जैसे वृक्ष को पानी मिलने से फलदायक हो जाता है, वैसे विशेषताओं को सेवा में लगाने से फलदायक बन जाते हैं। तो ऐसे विशेषताओं को सेवा में लगाए फल पाते रहना। अच्छा –

मौरीशियस – सदा अपने को बाप समान महादानी और वरदानी आत्मा समझते हो? बापदादा अपने समान शिक्षक अर्थात निमित्त सेवाधारी आत्माओं को देख हर्षित होते हैं। सदा पहले स्वंय को बाप समान स्वरूप सम्पन्न स्वरूप समझते हो? क्योंकि सेवाधारी अगर स्वंय सम्पन्न नहीं तो औरों को क्या होगा। सुना,अनुभव किया और ऐसा गोल्डन चान्स बाप समान सेवाधारी बनने का मिला, इससे बड़ा भाग्य औरक्या होगा। इसी प्राप्त हुए भाग्य को सदा आगे बढ़ाते चलो। अच्छा –

15.1.83

## सदा सहजयोगी की स्थिति में स्थित करने वाले सुख के सागर शिव बाबा बोले :–

''आज बाप दादा अपने सहयोगी भुजाओं को देख रहे हैं। कैसे मेरी सहयोगी भुजायें श्रेष्ठ कार्य को सफल बना रही हैं। हर भुजा के दिव्य अलौकिक कार्य की रफतार को देख बापदादा हर्षित हो रूहरिहान कर रहे थे। बापदादा देखते रहते हैं कि कोई-कोई भुजायें सदा अथक और एक ही श्रेष्ठ उमंग और उत्साह और तीव्रगति से सहयोगी हैं औरकोई-कोई कार्य करते रहते लेकिन बीच-बीच में उमंग उत्साह की तीव्रगति में अन्तर पड़ जाता है। लेकिन सदा अथक तीव्रति वाली भुजाओं के उमंग उत्साह को देखते-देखते स्वयं भी फिर से तीव्रगति से कार्य करने लग पड़ते हैं। एक दो के सहयोग से गति को तीव्र बनाते चल रहे हैं।

बापदादा आज तीन प्रकार के बच्चे देख रहे थे। एक सदासहज योगी। दूसरे हर विधि को बार-बार प्रयोग करने वाले प्रयोगी। तीसरे

सहयोगी। वैसें हैं तीनों ही योगी लेकिन भिन्न-भिन्न स्टेज के हैं। सहजयोगी, समीप सम्बन्ध औरसर्व प्राप्ति के कारण सहज योग का सदा स्वत: अनुभव करता है। सदा समर्थ स्वरूप होने के कारण इसी नशे में सदा अनुभव करता कि मैं हूँ ही बाप का। याद दिलाना नहीं पड़ता स्वयं को मैं आत्मा हूँ, मैं बाप का बच्चा हूँ। ''मैं हूँ ही'' सदा अपने कोइस अनुभव के नशे में प्राप्ति स्वरूप नैचुरल निश्चय करता है। सहयोगी को सर्व सिद्धियाँ स्वत: ही अनुभव होती हैं। इसलिए सहजयोगी सदा ही श्रेष्ठ उमंग उत्साह खुशी में एक-रस रहता है। सहजयोगी सर्व प्राप्तियों के अधिकारी स्वरूप में सदा शक्तिशाली स्थिति में स्थित रहते हैं।

प्रयोग करने वाले प्रयोगी सदा हर स्वरूप के, हर पाइंट के, हर प्राप्ति स्वरूप के प्रयोग करते हुए उस स्थिति को अनुभव करते हैं। लेकिन कभी सफलता का अनुभव करते, कभी मेहनत अनुभव करते। लेकिन प्रयोगी होने के कारण, बुद्धि अभ्यास की प्रयोगशाला में बिजी रहने के कारण ७५% माया से सेफ रहते हैं। कारण ? प्रयोगी आत्मा को शौक रहता है कि नये ते नये भिन्न-भिन्न अनु-भव करके देखे। इसी शौक में लगे रहने के कारण माया से प्रयोगशाला में सेफ रहते हैं। लेकिन एकरस नहीं होते। कभी अनुभव होने के कारण बहुत उमंग उत्साह मेंझूमते औरकभी विधि द्वारा सिद्धि की प्राप्ति कम होने के कारण उमंग उत्साह में फर्क पड़ जाता है। उमंग उत्साह कम होने के कारण मेहनत अनुभव होती है। इसलिए कभी सहजयोगी, कभी मेहनत वाले योगी। ''हूँ ही'' के बजाय ''हूँ हूँ''। ''आत्मा हूँ'' बच्चा हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ'' – इस स्मृति द्वारा सिद्धि को पाने का बार-बार प्रयत्न करना पड़ता है। इसलिए कभी तो इस स्टेज परस्थित होते जो सोचा और अनुभव हुआ। कभी बार-बार सोचने द्वारा स्वरूप की अनुभूति करते हैं। इसको कहा जाता है – प्रयोगी आत्मा। अधिकार का स्वरूप है सहजयोगी। बार-बार अध्ययन करने का स्वरूप है प्रयोगी आत्मा। तो आज देख रहे थे– सहज योगी कौन और प्रयोगी कौन है ? प्रयोगी भी कभी-कभी सहजयोगी बन जाते है। लेकिन सदा नहीं। जिस समय जो पोजीशन होती है, उसी प्रमाण स्थूल चेहरे के पोज भी बदलते है। मन की पोजीशन को भी देखते हैं। और पोज को भी देखते हैं। सारे दिन में कितनी पोज बदलते हो। अपने भिन्न-भिन्न पोज को जानते हो ? स्वयं को साक्षी होकर देखते हो ? बापदादा सदा यह बेहद का खेल जब चाहे तब देखते रहते हैं।

जैसे यहाँ लौकिक दुनिया में एक के ही भिन्न-भिन्न पोज हंसी के खेल में स्वयं ही देखते हैं। विदेश में यह खेल होता है ? यहाँ प्रैक्टिकल में ऐसा खेल तो नहीं करते हो ना। यहाँ भी कभी बोझ के कारण मोटे बन जाते हैं और कभी फिर बहुत सोंचने के संस्कार के कारण अन्दाज से भी लम्बे हो जाते हैं और कभी फिर दिलशिकस्त होने के कारण अपने को बहुत छोटादेखते हैं। कभी छोटे बन जाते, कभी मोटे बन जाते, कभी लम्बे बन जाते हैं। तो ऐसा खेल अच्छा लगता है ?

सभी डबल विदेशी सहजयोगी हो ? आज के दिन का सहज योगी का चार्ट रहा ? सिर्फ प्रयोग करने वाले प्रयोगी तो नहीं हो ना। डबल विदेशी मधुबन से सदाकाल के लिए सहजयोगी रहने का अनुभव लेकर जा रहे हो ? अच्छा – सहयोगी भी योगी हैं इसका फिर सुनायेंगे।

(सभी टीचर्स नीचे हाल में मुरली सुन रही थीं)

बापदादा के साथ निमित्त सेवाधारी कहो, निमित्त शिक्षक कहो तो आज साथियों का ग्रुप भी आया हुआ ळै ना। छोटे तो और ही अतिप्रिया होते हैं। नीचे होते भी सब ऊपर ही बैठे हैं। बापदादा छोटे वा बड़े लेकिन हिम्मत रखने वाले सेवा के क्षेत्र में स्वयं को सदा बिजी रखने वाले सेवाधारियों को बहुत बहुत यादप्यार दे रहे हैं। इसलिए त्यागी बन अनेकों के भाग्य बनाने के निमित्त बनाने वाले सेवाधारियों को बापदादा त्याग की विशेष आत्मायें देख रहे हैं। ऐसी विशेष आत्माओं को विशेष रूप से बधाई के साथ-साथ याद-प्यार। डबल कमाल कौन सी है ? एक तो बाप को जानने की कमाल की। दूरदेश, धर्म कापर्दा रीति रसम, खान-पान सबकी भिन्नता के पर्दे के बीच रहते हुए भी बाप को जान लिया। इसलिए डबल कमाल। पर्दे के अन्दर छिप गये थे। सेवा के लिए अब जन्म लिया है। भूल नहीं की लेकिन ड्रामा अनुसार सेवा के निमित्त चारों ओर बिखर गये थे। नहीं तो इतनी विदेशों में सेवा कैसे होती। सिर्फ सेवा के कारण अपना थोड़े समय कानाम मात्र हिसाब किताब जोड़ा, इसलिए डबल कमाल दिखाने वाले सदा बाप के स्नेह के चात्रक, सदा दिल से 'मेरा बाबा' के गीत गाने वाले, 'जाना है, जाना है,' १२ मास इसी धुन में रहने वाले, ऐसे हिम्मत कर बाप दादा के मददगार बनने वाले बच्चों को यादप्यार औ नमस्ते।

सेवाधारी भाई बहनों से :– महायज्ञ की महासेवा का प्रसाद खाया ? प्रसाद तो कभी भी कम होने वाला नहीं है। ऐसा अविनाशी महाप्रसाद प्राप्त किया ? कितना वैरयटी प्रसाद मिला ? सदाकाल के लिए खुशी, सदा के लिए नशा, अनुभूति ऐसे सर्व प्रकार का प्रसाद पाया ? तो प्रसाद बांटकर खाया जाता है। प्रसाद आंखों के ऊपर, मस्तक के ऊपर रखकर खाते हैं। तो यह प्रसाद ऑखों मे समा जाए। मस्तक में स्मृति स्वरूप हो जाए अर्थात् समा जाए। ऐसा प्रसाद इस महायज्ञ में मिला ? महाप्रसाद लेने वाले कितने महान भाग्यवान हुए ऐसे चान्स कितनों को मिलता है ? बहुत थोड़ों को उन थोड़ो में से आप हो। तो महान भाग्यवान हो गये ना। जैसे यहाँ बाप और सेवा इसके सिवाए तीसरा कुछ भी याद नहीं रहा, तो यहाँ का अनुभव सदा कायम रखना है। वैसे भी कहाँ जाते हैं तो विशेष वहाँ से कोई न कोई यादगार ले जाते हैं, तो मधुबन का विशेष यादगार क्या ले जायेंगे ? निरन्तर सर्व प्राप्ति स्वरूप हो रहेंगे।

तो वहाँ भी जाकर ऐसे ही रहेंगे या कहेंगे वायुमण्डल ऐसा था, संग ऐसा था। परिवर्तन भूमि से परिवर्तन होकर जाना। कैसा भी वायुमण्डल हो लेकिनआप अपनी शक्ति से परिवर्तन कर लो। इतनी शक्ति है ना। वायुमण्डल का प्रभाव आप पर न आवे। सभी सम्पन्न बन करके जाना।

माताओं के साथ – माताओं के लिए तो बहुत खुशी की बात हैं – क्योंकि बाप आया ही है माताओं के लिए। गऊपाल बनकर गऊ माताओं के लिए आये हैं। इसी का तो यादगार गाया हुआ है। जिसको किसी ने भी योग्य नहीं समझा लेकिन बाप ने योग्य आपको ही समझा – इसी खुशी में सदा उड़ते चलो। कोई दु:ख की लहर आ नहीं सकती। क्योंकि सुख के सागर के बच्चे बन गये। सुख क सागर में समाने वालों को कभी दु:ख की लहर नहीं आ सकती है – ऐसे सुख स्वरूप।

21.1.83

## संगम पर बाप और ब्राहमण सदा साथ साथ

बेहद की सेवा के निमित्त बनाने वाले बाप दादा अपने फ्रैन्डस बच्चों के प्रति बोले :–

''आज बापदादा अपने राइट हैन्डज़ से सिर्फ हैन्डशेक करने के लिए आये हैं। तो हैन्डशेक कितने में होती है? सभी ने हैन्डशेक कर ली? फिर भी एक दृढ़ संकल्प कर सच्चे साजन की सजनियाँ तो बन गई हैं। तब ही विश्व की सेवा का कार्य सम्भालने के निमित्त बनी हो? वायदे के पक्के होने के कारण बाप दादा को भी वायदा निभाना पड़ा। वायदा तो पूरा हुआ ना। सबसे नजदीक से नजदीक गाड के फ्रैन्डस कौन हैं? अभी सभी गाड के अति समीप के फ्रैन्डस हो। क्योंकि समान कर्तव्य पर हो। जैसे बाप बेहद की सेवा प्रति है वैसे ही आप छोटे बड़े बेहद के सेवाधारी हो। आज विशेष छोटे-छोटे फ्रैन्डस के लिए खास आये हैं। क्योंकि हैं छोटे लेकिन जिम्मेदारी तो बड़ी ली है ना। इसलिए छोटे फ्रैन्डस ज्यादा प्रिया होते हैं। अभी उल्हना तो नहीं रहा ना। अच्छा। (बहनों जो गीत गाया – जो वायदा किया है, निभाना पड़ेगा)''

बापदादा तो सदा ही बच्चों की सेवा में तत्पर ही है। अभी भी साथ हैं और सदा ही साथ हैं। जब हैं ही कम्बाइन्ड तो कम्बाइन्ड को कोई अलग कर सकता है क्या? यह रूहानी युगल स्वरूप कभी भी एक दो से अलग नहीं हो सकते। जैसे ब्रह्मा बाप और दादा कम्बाइन्ड हैं, उन्हों को अलग कर सकते हो? तो फालो फादर करने वाले ब्राहमण श्रेष्ठ और बाप कम्बाइन्ड हैं। यह तो आना और जाना तो ड्रामा में ड्रामा है। वैसे अनादि ड्रामा अनुसार अनादि कम्बाइन्ड स्वरूप संगमयुग पर बन ही गये हो। जब तक संगमयुग है, तब तक बाप और श्रेष्ठ आत्मायें सदा साथ हैं। इसलिए खेल में खेल करके गीत भले गाओ, नाचो गाओ, हंसो-बहलो लेकिन कम्बाइन्ड रूप को नहीं भूलना। बाप दादा तो मास्टर शिक्षक को बहुत श्रेष्ठ नजर से देखते हैं, वैसे तो सर्व ब्राहमण श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ हैं लेकिन जो मास्टर शिक्षक बन अपने दिल व जान, सिक व प्रेम से दिन रात सच्चे सेवक बन सेवा करते वह विशेष में विशेष और विशेष में भी विशेष हैं। इतना अपना स्वमान सदा स्मृति में रखते हुए संकल्प,बोल और कर्म में आओ। सदा यही याद रखना कि हम नयनों के नूर हैं। मस्तक की मणि हैं, गले के विजय माला के मणके हैं और बाप के होठों की मुस्कान हम हैं। ऐसे सर्व चारों ओर से आये हुए छोटे-छोटे और बड़े प्रिय फ्रैन्डस को वा जो भी सभी बच्चे आये हैं, वह सभी अपने-अपने नाम से अपनी याद स्वीकार करना। चाहे नीचे बैठे हैं, चाहे ऊपर बैठे हैं, नीचे वाले भी नयनों में और ऊपर वाले नयनों के सम्मुख हैं। इसलिए अभी वायदा निभाया, अभी सभी फ्रैन्डस में सर्व साथियों से यादप्यार और नमस्ते।

थोड़ा-थोड़ा मिलना अच्छा है। आप लोगों ने इतना ही वायादा किया था। (गीत अभी न जाओ छोड़ के, कि दिल अभी भरा नहीं.....) दिल भरने वाली है कभी? यह तो जितना मिलेंगे उतना दिल भरेगी। अच्छज्ञ – (दीदी जी को देखते हुए) – ठीक है ना। दीदी से वायदा किया हुआ है, साकार का। तो यह भी निभाना पड़ता है। दिल भर जाए तो खाली करना पड़ेगा, इसलिए भरता ही रहे तो ठीक है। (दीदी जी से) इनका संकल्प ज्यादा आ रहा था। आप सब छोटी-छोटी बहनों से दादी-दीदी का ज्यादा प्यार रहता है। दीदी-दादी जो निमित्त है, उन्हों का आप लोगों से विशेष प्यार। अच्छा किया, बाप दादा भी आफरीन देते हैं। जिस प्यार से आप लोगों को यह चांस मिला है, उस प्यार से मिलन भी हुआ। नियम प्रमाण आना यह कोई बड़ी बात नहीं, यह भी एक विशेष स्नेह का विशेष प्यार का रिर्टन मिल रहा है। इसलिए जिस उमंग से आप लोग आये, ड्रामा में आप सबका बहुत ही अच्छा गोल्डन चांस रहा। तो सब गोल्डन चान्सलर हो गये ना। वह सिर्फ चांसलर होते हैं, आप गोल्डन चांसलर हो अच्छा''

26.1.83

## दाता के बच्चे बन सर्व को सहयोग दो

सर्व को सहयोग देने के निमित्त बनाने वाले, सदा दाता शिव बाबा अपने सेवाधारी बच्चों के प्रति बोले:–

''आज बापदादा अपने सेवाधारी साथियों से मिलने आये हैं, जैसे बापदादा ऊंचे ते ऊंचे स्थान पर स्थित हो बेहद की सेवा अर्थ निमित्त हैं, ऐसे ही आप सभी भी ऊंचे ते ऊंचे साकार स्थान पर स्थित हो बेहद की सेवा प्रति निमित्त हो। जिस स्थान के तरफ अनेक आत्माओं की नजर है। जैसे बाप के यथार्थ स्थान को न जानते हुए भी फिर भी सबकी नजर ऊंचे तरफ जाती है, ऐसे ही साकार में

सर्व आत्माओं की नजर इस महान स्थान पर ही जा रही है और जायेगी। ''कहाँ पर है'' अभी तक इसी खोज में हैं। समझते हैं कि कोई श्रेष्ठ ठिकाना मिले। लेकिन यही वह स्थान है, इसकी पहचान के लिए चारों ओर परिचय देने की सेवा सभी कर रहे हैं। यह बेहद का विशेष कार्य ही इसी सेवा को प्रसिद्ध करेगा कि मिलना है वा पाना है तो यहाँ से। यही अपना श्रेष्ठ ठिकाना है। विश्व के इसी श्रेष्ठ कोने से ही सदाकाल का जीयदान मिलना है। इस बेहद के कार्य द्वारा यह एडवरटाइज विशाल रूप में होनी है, जैसे धरती के अन्दर कोई छिपी हुई वा दबी हुई चीजें अचानक मिल जाती हैं तो खुशी-खुशी से सब तरफ प्रचार करते हैं। ऐसे ही यह आध्यात्मिक खजानों की प्राप्ति का स्थान जो अभी गुप्त है, इसको अनुभव के नेत्र द्वारा देख ऐसे ही समझेंगे जैसे गँवाया हुआ, खोया हुआ गुप्त खजाने का स्थान फिर से मिल गया है। धीरे-धीरे सबके मन से, मुख से यही बोल निकलेंगे कि ऐसे कोने में इतना श्रेष्ठ प्रापति का स्थान। इसको तो खूब प्रसिद्ध करो। तो विचित्र बाप, विचित्र लीला और विचित्र स्थान, यही देख-देख हर्षित होंगे। वन्डरफुल बात है, वन्डरफुल कार्य है यही सबके मुख से सुनते रहेंगे। ऐसे सदाकाल की अनुभूति कराने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की हैं।

हाल तो तैयार कर रहे हैं, हाल के साथ चाल भी ठीक है? हाल के साथ चाल भी देखेंगे ना। तो हाल और चाल दोनों ही विशाल और बेहद है ना। जेसे मजदूरों से लेकर बड़े-बड़े इन्जीनियर्स, दोनों के सहयोग और संगठन से हाल की सुन्दर रूप रेखा तैयार हुई है, अगर मजदूर न होते तो इन्जीनियर भी क्या करते। वे कागज पर प्लैन बना सकते हैं, लेकिन प्रैक्टिकल स्वरूप तो बिना मजदूरों के हो नहीं सकता। तो जेसे स्थूल सहयोग के आधार पर सर्व की अंगुली लगने से हाल तैयार हो गया है। वैसे हाल के साथ वन्डरफुल चाल दिखाने के लिए ऐसा विशेष स्वरूप प्रत्यक्ष रूप में दिखाओ। सिर्फ बुद्धि में संकल्प किया, यह नहीं। लेकिन जैसे इन्जीनियर के बुद्धि की मदद और मजदूरों के कर्म की मदद से कार्य सम्पन्न हुआ। इसी रीति मन के श्रेष्ठ संकल्प साथ-साथ हर कर्म द्वारा ही दिखाई देता है। तो ऐसे चलने और करने को संकल्प , वाणी हाथ वा पाँव द्वारा संगठित रूप में विचित्र स्वरूप से दिखाने का दृढ़ संकल्प किया है? ऐसी चाल का नक्शा तैयार किया है? सिर्फ ३ हजार की सभा नहीं लेकिन ३ हजार में सदा त्रिमूर्ति दिखाई दे। यह सब ब्रह्मा के समान कर्मयोगी,विष्णु के समान प्रेम और शक्ति से पालना करने वाले, शंकर के समान तपस्वी वायुमण्डल बनाने वाले हैं, ऐसा अनुभव हर एक द्वारा हो। ऐसा स्वंय में सर्व शक्तियों का स्टाक जमा किया है? यह भी भण्डारा भरपूर किया है? यह स्टाक चेक किया है? वा सभी ऐसे बिजी हो गये हो जो चेक करने की फुर्सत ही नहीं?

सेवा की अविनाशी सफलता के लिए स्वयं के किस विशेष परिवर्तन की आहुति डालेंगे? ऐसा अपने आप से प्लैन बनाया है? सबसे बड़े ते बड़ी देन है दाता के बच्चे बन सर्व को सहयोग देना। बिगड़े हुए कार्य को, बिगड़े हुए संस्कारों को, बिगडे हुए मूड को शुभ भावना से ठीक करने में सदा सर्व के सहयोगी बनना – यह है बड़े ते बड़ी विशेष देन। इसने यह कहा, यह किया, यह देखते, सुनते, समझते हुए भी अपने सहयोग के स्टाक द्वारा परिवर्तन कर देना जैसे कोई खाली स्थान होता है तो आलराउन्ड सेवाधारी समय प्रमाण जगह भर देते हैं। ऐसे अगर किसी भी द्वारा कोई शक्ति की कमी अनुभव भी हो तो अपने सहयोग से जगह भर दो। जिससे दूसरे की कभी का भी अन्य कोई को अनुभव न हो। इसको कहा जाता है – दाता के बच्चे बन समय प्रमाण उसे सहयोग की देन देना। यह नहीं सोचना है, इसने यह किया, ऐसा किया, लेकिन क्या होना चाहिए वह करते रहो। कोई की कमी न देखना, लेकिन आगे बढ़ते रहना। अच्दे ते अच्छा क्या हो सकता है वह भी सिर्फ सोचना नहीं है लेकिन करना है। इसको ही विचित्र चाल का प्रत्यक्ष स्वरूप कहा जायेगा। सदा अच्छे ते अच्छा हो रहा है और सदा अच्दे ते अच्छा करते रहना है – इसी समर्थ संकल्प को साथ रखना। सिर्फ वर्णन नहीं करना लेकिन निवारण करते नव निर्माण के कर्तव्य की सफलता को प्रत्यक्ष रूप में देखते और दिखाते रहना। ऐसी तैयारी भी हो रही है ना क्योंकि सभी की जिम्मेवारी होते हुए भी विशेष मधुबन निवासियों की जिम्मेवारी है। डबल जिम्मेवारी ली है ना। जेसे हाल का उद्घाटन कराया तो चाल का भी उद्घाटन हो गया है? वह भी रिर्हसल हुई वा नहीं। दोनों का मेल हो जायेगा तब ही सफलता का नगाड़ा चारों ओर तक पहुँचेगा। जितना ऊंचा स्थान होता है उतनी लाइट चारों ओर ज्यादा फैलती है। यह तो सबसे ऊंचा स्थान है तो यहाँ से निकला हुआ आवाज चारों ओर तक पहुंचे उसके लिए लाइट माइट हाउस बनना है। अच्छा –

सदा स्वंय को हर गुण, हर शक्ति सम्पन्न साक्षात् बाप स्वरूप बन सर्व को साक्षात्कार कराने वाले, सदा वचित्र स्थिति में स्थित हो साकार चित्र द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने वाले, ऊंचे ते ऊंची स्थिति द्वारा ऊंचे ते ऊंचे स्थान को, ऊंचे ते ऊंचे प्राप्तियों के भण्डार को प्रत्यक्ष करने वाले, सर्व के मन से मिल गया, पा लिया का गीत निकलने की सदा शुभभावना, शुभकामना रखने वाले – ऐसे सर्व श्रेष्ठ बेहद सेवाधारियों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

मधुबन निवासियों के साथ :–वरदान भूमि पर रहने वालों को सदा सन्तुष्ट रहने का वरदान मिला हुआ है ना। जो जितना अपने को सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न अनुभव करेंगे वह सदा सन्तुष्ट होंगे। अगर जरा भी कमी की महसूसता हुई तो जहाँ कमी है वहाँ असन्तुष्टता है। तो सर्व प्राप्ति है ना। संकल्प की सिद्धि तो फिर भी हो रही हैना। थोड़ी मेहनत करनी पड़ती है क्योंकि अपना राज्य तो है नहीं। जितनी औरों के आगे प्राबलम आती है उतना यहाँ नहीं। यहाँ प्राबलम तो खेल हो गई है फिर भी समय पर बहुत सहयोग मिलता

रहा है – क्योंकि हिम्मत रखी है। जहाँ हिम्मत है वहाँ सहयोग प्राप्त हो ही जाता है। अपने मन मे कोई हलचल नहीं होनी चाहिए। मन सदैव हल्का रहने से सर्व के पास भी आपके लिए हल्कापन रहेगा। थोडा बहुत हिसाब किताब तो होता ही है लेकिन उस हिसाब किताब को भी ऐस ही पार करो जैसे कोई बड़ी बात नहीं। छोटी बात को बड़ा नहीं करो। छोटा करना वा बड़ा करना यह अपनी बुद्धि के ऊपर है। अभी बेहद की सेवा का समय है तो बुद्धि भी बेहद की रखो। वातावरण शक्तिशाली बनाना है, यह हरेक आत्मा स्वयं को जिम्मेवार समझे। जबकि एक दो के स्वभाव संस्कार से टक्कर नहीं खा सकते। जैसे किसको पता है कि यहाँ खड्डा है वा पहाड़ा है तो जानने वाला कब टकरायेगा नहीं। किनारा कर लेगा । तो स्वयं को सदा सेफ रखना है। जब एक टक्कर नहीं खायेगा तो दूसरा स्वयं ही बच जायेगा। किनारा करो अर्थात् अपने को सेफ रखो और वायुमण्डल को सेफ रखो। काम से किनारा नहीं करना है। अपनी सेफ्टी की शक्ति से दूसरे को भी सेफ करना यह है किनारा करना। ऐसी शक्ति तो आ गई है ना।

साकार रूप में फालो करने के हिसाब से सबको मधुबन ही दिखाई देता है क्योंकि ऊंचा स्थान है। मधुबन वाले तो सदा झूले में झूलते रहते। यहाँ तो सब झूले। स्थूल प्राप्ति भी बहुत है तो सूक्ष्म प्राप्ति भी बहुत है सदा झूले में होंगे तो कब भूलें नहीं होंगी। प्राप्ति के झूले से उतरते हैं तो भूलें अपनी भी दसरे को भी दिखाई देंगी। झूले में बैठने से धरनी को छोड़ना पड़ता है। तो मधुबन वाले तोसर्व प्राप्ति के झूले में सदा झूलते रहते। सिर्फ प्राप्ति के आधार पर जीवन न हो। प्राप्ति आपके आगे भल आवे लेकिन आप प्राप्ति को स्वीकार नहीं कर लो। अगर इच्छा रखी तो सर्व प्राप्ति होते भी कभी महसूस होगी। सदा अपने को खाली समझेंगे। तो ऐसा भाग्य है जो बिना मेहनत के प्राप्ति स्वयं आती है। तो इस भाग्य को सदा स्मृति में रखो। जितना स्वयं निष्काम बनेंगे उतना प्राप्ति आपके आगे स्वत: ही आयेगी। अच्छा –

सेवाधारियों से :– सेवाधारी का अर्थ ही है प्रत्यक्षफल खाने वाले। सेवा की और खुशी की अनुभूति की तो यह प्रत्यक्षफल खाया ना। सेवाधारी बनना यह तो बड़े ते बड़े भाग्य की निशानी है। जन्म-जन्म के लिए अपने को राज्य अधिकारी बनने का सहज साधन है। इसलिए सेवा करना अर्थात् भाग्य का सितारा चमकना। तो ऐसे समझते हुए सेवा कर रहे हो ना। सेवा लगती है या प्राप्ति लगती है? नाम सेवा है लेकिन यह सेवा करना नहीं है, मिलना है। कितना मिलता है? करते कुछ भी नहीं हो और मिलता सब कुछ है। करने में सब सुख के साधन मिलते हैं। कोई मुश्किल नहीं करना पड़ता है, कितना भी हार्ड वर्क हो लेकिन सैलवेशन भी साथ-साथ मिलती है तो वह हार्ड वर्क नहीं लगता खेल लगता है। इसलिए सेवाधारी बनना अर्थात् प्राप्तियों के मालिक बनना। सारे दिन में कितनी प्राप्ति करते हो? एक एक दिन की, एक एक घण्टे को प्राप्ति का अगर हिसाब लगाओ तो कितना अनगिनत है, इसलिए सेवाधारी बनना भाग्य की निशानी है। सेवा का चान्स मिला अर्थात प्राप्तियों के भण्डार भरपूर हो हुए। स्थूल प्राप्ति भी है और सूक्ष्म भी। कहीं भी कोई सेवा करो तो स्थूल साधन इतने नहीं मिलते जितने मधुबन में मिलते हैं। यहाँ सेवा के साथ-साथ पहले तो अपने आत्मा की , शरीर की पालना, डबल होती है। तो सेवा करते खुशी होती है या थकावट होती है? सेवा करते सदैव यह चेक करो कि डबल सेवा कर रहा हूँ। मंसा द्वारा वायुमण्डल श्रेष्ठ बनाने की ओर कर्म द्वारा स्थूल सेवा। तो एक सेवा नहीं करनी है। लेकिन एक ही समय पर डबल सेवाधारी बन करके अपना डबल कमाई का चांस लेना है।

सभी सन्तुष्ट हो? सभी अपने-अपने कार्य में अच्छी तरह से निर्विघ्न हो? कोई भी कार्य में कोई खिट-खिट तो नहींहै? कभी आपस में खिट-खिट तो नहीं करते हो। कभी तेरा मेरा, मैंने किया तुमने किया – यह भावना तो नहीं आती है? क्योंकि अगर किया और यह संकल्प में भी आया मैंने तो जो भी किया वह सारा खत्म हो गया। मेरा-पन आना माना सारे किये हुए कार्य पर पानी डाल देना। ऐसे तो नहीं करते हो? सेवाधारी अर्थात् करावनहार बाप निमित्त बनाए करा रहे हैं। करावनहार को नही भूलें। जहाँ निमित्त भाव होगा मैं पन आया तो माया भी आई। निमित्त हूँ निमार्ण हूँ तो माया आ नहीं सकती। संकल्प यास्वप्न में भी माया आती है तो सिद्ध होता कि कहाँ मैं-पन का दरवाजा खुला है। मैं-पन का दरवाजा बन्द रहे तो कभी भी माया आ नहींसकती। अच्छा –

15.2.83

## विश्व शान्ति सम्मेलन के समाप्ति समारोह पर प्राण अव्यक्त बाप दादा के मधुर अनमोल महावाक्य

'' आज बेहद का बाप सेवा के निमित्त बने हुए सेवाधारी बच्चों को देख रहे हैं। जिस भी बच्चे को देखें, हरेक, एक दो से श्रेष्ठ आत्मा है। तो बापदादा हरेक श्रेष्ठ आत्मा की, सेवाधारी आत्मा की विशेषता को देख रहे हैं। बापदादा को हर्ष है कि हरेक बच्चा इस विश्व परिवर्तन के कार्य में आधारमूर्त, उद्धारमूर्त है। सभी बच्चे बापदादा के कार्य में सदा सहयोगी आत्मा हैं। ऐसे सहयोगी, सहजयोगी श्रेष्ठ विशेष आत्माओं को वा सेवा के निमित्त बने हुए बच्चों को देख बापदादा अति स्नेह के सुनहरी पुष्पें से बच्चों को स्वागत और मुबारक की सैरीमनी मना रहे हैं। बापदादा हर बच्चे को मस्तकमणि, सन्तुष्ट मणि, हृदयमणि जैस चमकते हुए स्वरूप में देखते हैं। बापदादा भी सदा एक गीत गाते रहते हैं, कौन सा गीत गाते हैं, जानते हो ना? यही गीत गाते– वाह मेरे बच्चे वाह! वाह मीठे बच्चे वाह! वाह प्यरे ते प्यारे बच्चे वाह! वाह श्रेष्ठ आत्मायें वाह! ऐसा ही निश्चय और नशा सदा रहता है ना। सारे कल्प में ऐसा भाग्य प्राप्त नहीं हो सकता जो भगवान बच्चों के गीत गाये। भक्त, भगवान के गीत बहुत गाते हैं। आप सब ने भी बहुत गीत

गाये हैं। लेकिन ऐसे कब सोचा कि कब भगवान भी हमारे गीत गायेंगे। जो सोचा नहीं था वह साकार रूप में देख रहे हो। विश्व शान्ति की कानफ्रेंस कर ली। सभी बच्चों ने मुख द्वारा बहुत अच्छी अच्छी बातें सुनाई और मन द्वारा सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना के शुभ संकल्प के वायब्रेशन भी चारों ओर ज्ञान सूर्य बन फैलाए। लेकिन बाप दादा सभी भाषण करने वालों का सार सुना रहे हैं। । आप लोगों ने तो चार दिन भाषण किये और बापदादा एक सेकण्ड का भाषण करते हैं। वह दो शब्द हैं रिय-लाइजेशन और सोल्युशन। जो भी आप सबने बोला उसका सार रियलाइजेशन ही है। आत्म को नहीं भी समझें लेकिन मानव के मूल्य को जानें तो भी शान्ति हो जाए। मानव विशेष शक्तिशाली स्वरूप है। अगर यह भी रियलाइज कर लें तो मानव के हिसाब से भी मानव धर्म 'स्नेह' है न कि लड़ाई झगड़ा। इससे आगे चलो – मानव जीवन का व मानवता का आधार आत्मा पर है। मैं कौन सी आत्मा हूँ, क्या हूँ, यह रियलाइज कर लें तो शान्ति तो स्वधर्म हो जायेगा। फिर आगे चलो – ''मै श्रेष्ठ आत्मा हूँ, सर्व शक्तिवान की सन्तान हूँ, यह रियलाइजेशन निर्बल से शक्ति स्वरूप बना देगी। शक्ति स्वरूप आत्मा वा मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा जो चाहे, जैसे चाहे वह प्रैक्टिकल में कर सकती है, इसलिए सुनाया कि सारे भाषणों का सर एक ही है''रियलाइजेशन'' तो बाप दादा ने सभी भाषण सुने हैं ना।! बाप दादा सदा बच्चों के साथ हैं ही। अच्छा –

सभी सेवा में समर्पित बच्चों, सभी जोन से आये हुए बच्चों को, एक-एक यही समझे कि बापदादा मेरे को कह रहे हैं। एक एक से बात कर रहे हैं। सभी बच्चों ने जो प्रत्यक्ष सबूत दिखाया, उसके रिटर्न में बापदादा रहेक बच्चे को नाम सहित, रूप तो देख रहे हैं, नाम सहित मुबारक दे रहे हैं। अब तो जब आप समय परिवर्तन की सूचना दे रहे हो, तो बापदादा के मिलने का भी परिवर्तन होगा ना। आप सबका संकल्प है हमारा परिवार वृद्धि को पाए तो पुरानों को त्याग करना पड़ेगा। लेकिन यह त्याग ही भाग्य है। दूसरों को आगे बढ़ाना ही स्वंय को आगे बढ़ाना है। ऐसे नहीं समझना क्यों बाप दादा को विदेशी बच्चे प्रिय हैं, देश वाले नहीं हैं। वा कोई विशेष बच्चे प्रिय है। बाप दादा के तो हरेक बच्चा दिल का सहारा, मस्तक के ताज की मणि है। इसलिए बापदादा सबसे पहले अपने राइट हैण्डसस सहयोगी बच्चों को अति दिल व जान, सिक व प्रेम से याद दे रहे हैं। यह तोजरूर है दूर से आने वाले, सम्पर्क में आने वालों को सम्बन्ध में लाने के लिए आप सभी खुशी खुशी उन्हीं को आगे बढ़ा रहे हो और बढ़ाते रहेंगे।

इस समय सब सेवा के प्रति आये हो। इसलिए यह भी सेवा हो गई। हरेक जोन का नाम लेवे क्या? अगर एक नाम लेंगे तो कोई रह जाए तो? इसलिए सभी जान समझें कि बाप दादा मुझे पहला नम्बर रख रहे हैं। सर्व देश के वा विदेश के, अब तो सभी मधुबन निवासी हों, इसलिए सर्व विश्व शान्ति हाल में उपस्थित बच्चों को, ओम् शान्ति भवन निवासी बच्चों को बाप दादा, सदा याद में रहो, याददिलाते रहो, हर कदम यादगार चरित्र बनाते चलते चलो। हर सेकेण्ड अपने प्रैक्टिकल लाइफ के आइने द्वारा सर्व आत्माओं को 'स्व' का, बाप का साक्षात्कार कराते चलो, ऐसे वरदानी महादानी सदा सम्पन्न बच्चों को बापदादा का याद प्यार ओर नमस्ते।

राबर्ट मूलर (असिस्टेंट सेकेट्री जनरल यू.एन.ओ.) के प्रति महावाक्य –

सेवा में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ पार्टधारी आत्मा हो। जैसे मन में यह श्रेष्ठ संकल्प रखा कि जिस कार्य के लिए निमित्त बने हो वह करके ही दिखायेंगे। यह संकल्प बाप दादा और सारे ब्राहमण परिवान के सहयोग से साकार में आता ही रहेगा। संकल्पबहुत अच्छा है। प्लैन भी बहुत अच्छे-अच्छे सोचते हो। अभी इसी प्लैन के बीच में जब यह स्प्रिचुअल पावन एड हो जायेगी तो यह प्लैन साकार रूप लेते रहेंगे। बाप दादा के पास बच्चों के सभी उमंग पहुंचाते रहते हैं। सदा अटल रहना। हिम्मतवान बनकर आगे बढ़ते जाना। वह दिन भी इन ऑखों से दिखाई देगा कि विश्व शान्ति का झण्डा विश्वप के चारों ओर लहरायेगा। इसलिए आगे बढ़ते चलो। दुनिया वाले दिल-शिक्स्त बनायेंगे। आप मत बनना। एक बल एक भरोसा, इसी निश्चय से चलते रहना। जिस समय कोई भी परिस्थिति आये तो बाप को साथी बना लेना। तो ऐसा अनुभव करेंगे कि मैं अकेला नहीं हूँ, मेरे साथ विशेष शक्ति है। स्वप्न पूरा हो जायेगा। जहाँ बाप है। वहाँ कितने भी चाहे तूफान हों, वह तोफा बन जायेंगे। निश्चय बुद्धि विजयन्ति यह टाइटिल याद रखना कि मैं निश्चय बुद्धि विजयी रतन हूँ। अच्छा ।

स्टीव नारायण (वाइस प्रेजीडेन्ट, ग्याना) के प्रति महावाक्य – अपने को बाप के दिलतख्तनशीन समीप रतन अनुभव करते हो? दूरदेश में रहते भी दिल से दूर नहीं हो। बच्चों का सर्विस में उमंग उल्लास देख बापदादा हर्षित होते हैं और नम्बरवन देते हैं। सदा उड़ती कला में रहने वाले बाप दादा के नूरे रतन हो। इसलिए बाप दादा मुबारक देते हैं।

(आन्टी बेटी से) – आपको नया जन्म लेते ही आशीर्वाद मिली हुई है कि आप सर्विसएबुल हो। अनुभवी मूर्त हो। ग्याना में रहते हुए भी विश्व सेवा अर्थ निमित्त मूर्त हो और रहेंगी। याद द्वारा बाप के सहयोग और वरदानों का अनुभव होता है ना। आपकी याद बाप को पहुंचती रहती है। सर्व संकल्प सिद्धि होते रहते हैं ना। आप एक श्रेष्ठ आत्मा के एक ही श्रेष्ठ संकल्प से सारा परिवार श्रेष्ठ पद को पा रहा है। पद्मापदम भाग्यशाली हो।

''विश्व शान्ति सम्मेलन मे सम्मिलित होने वाले भाई बहनों के प्रति अव्यक्त बाप दादा का मधुर सन्देश

(गुलजार बहन द्वारा)

सदा की रीति प्रमाण आज जैसे ही मैं वतन में पहुंची तो बाप दादा बहुत मीठी नजर से दृष्टि द्वारा सर्व बच्चों को यादप्यार दे रहे थे। बाबा की दृष्टि से आज ऐसे अनुभव हो रहा था जैसे अति शान्ति, शक्ति, प्रेम और आनन्द की किरणें निकल रही हों। ऐसी रूहानी दृष्टि जिससे चार ही बातों की प्राप्ति हो रही थी। ऐसे लग रहा था जैसे हम बहुत कुछ पा रहे हैं। ऐसे बाप दादा ने हम सभी बच्चें का स्वागत किया और बोले :- '' बच्ची, सभी की याद लाई हो?'' मैनें कहा –'याद तो 'लाई हूँ लेकिन सबके आहवान का संकल्प भी लाई हूँ'' तो बाबा बोले – ''इसम समय तो मेरे इतने प्यारे बच्चे, जो भी आये हैं, जानने के लिए आए हैं, ऐसा भी दिन आएगा जो फिर मिलने के लिए आयेंगे। बापदादा तो सभी बच्चों कादृश्य वतन में रहते हए भी सदा देखते रहते हैं।'' ऐसा कहते बाबा ने एक दृश्य दिखाया – जैसे भारत देख में भक्त लोग मन्दिरों में शिवलिंग की प्रतिमा बनाते हैं। ऐसे वतन में भी एक प्रतिमा दिखाई दी लेकिन उस प्रतिमा का गोल आकार था। और उस गोल आकार में अनेक चमकते हुए हीरे चारों ओर नजर आ रहे थे। उन चमकते हुए हीरों पर चार प्रकार की लाइट पड़ रही थी। एक रंग था सफेद, दूसरा हरा, तीसरा हल्का ब्लयु और चौथा गोल्ड। थोड़े समय में वह लाइट शब्दों में बदल गई। सफेद लाइट के अक्षरों से लिखा था शान्ति। दूसरे पर उमंग, तीसरे पर उत्साह और चौथा लाइट की सेवा।

तो बाबा बोले – ''सभी बच्चों ने बहुत ही उमंग उत्साह और शान्ति के संकल्प द्वक्षारा विश्व की सेवा की। एक-एक आत्मा संगठित रूप में देखो कितनी चमक रही है।'' फिर बाबा ने कहा – '' मेरे बच्चे मुझे यथा शक्ति जान पाए हैं, फिर भी हैं तो मेरे ही बच्चे। मेरे सभी मीठे मीठे बच्चों को यादप्यार देना। जो भी बच्चे आये हैं। सबके मुख से यह आवाज तो निकलती है कि हम अपने घर में आये हैं सबके मुख से यह आवाज़ सुनकर मुस्कराते हैं। जब बच्चे घर में आए हैं तो पूरा अधिकार लेने आए हैं, या थोड़ा सा?'' तो बाबा ने कहा – ''सागर के किनारे पर आकर गागार भर करनहीं जाना लेकिन मास्टर सागर बनकर जाना। खान पर आकर दो मुट्ठी भर कर नहीं जाना।'' फिर बाप दादा ने तीन प्रकार के बच्चों कोतीन प्रकार की सौगात दी –

१. बाबा बोले – '' मेरे कलमधारी बच्चे (प्रेस वाले) जो आये हैं उन्हें बाप दादा कमल पुष्प की सौगात देते हैं। मेरे कमलधारी बच्चों को कहना कि सदा कमल समान सारे विश्व के तमोगुणी वायब्रेशन से न्यारे और पितापरमात्मा के प्यारे बनें। अगर ऐसी स्थिति में स्थित हो कलम चलायेंगे तो आपका व्यवहार भी सिद्ध हो जायेगा और परमार्थ भी सिद्ध हो जायेगा। ''

२. वी.आई.पी. बच्चे जो भी आये हैं, उन्हों को बाबा ने सिंहासन नहीं लेकिन हंस आसन दिया। बाबा बोले – ''यह जो मेरे वी.आई.पी. बच्चे आये हैं उन्हों के मुख में शक्ति है। इन्हें मैं हंस आसन देता हूँ। इस आसन पर बैठकर फिर कोई कार्य करना। हंस आसन पर बैठने से आपकी निर्णय शक्ति रेष्ठ होगी और जो भी कार्य करते हो वैसे बुद्धि इस हंस आसन पर रहे तो लौकिक कार्य से भी आत्माओं को स्नेह और शक्ति मिलती रहेगी।''

३. सरेन्डर सेवाधारी बच्चों को बाप दादा ने एक बहुत अच्छा लाइट के फूलों का बना हुआ हार दिया। हरेक लाइट पर कोई न कोई दिव्यगुण लिखा था तो बाबा बोले – ''ये मेरे बच्चे सर्वगुण धारण वाले गुण मूर्त बच्चे हैं। सभी बच्चों ने एक बल एक मत होकर जो यह बेहद की सेवा की, उसके रिटर्न में बाप दादा यह दिव्यगुणों की माला सभी बच्चों को सौगात रूप में देते हैं। और लास्ट में कहा – ''सभी बच्चों को बाप दादा के यही महावाक्य सुनाना – कि सदा खुश रहना, खुशनशीब बनना और सर्व को खुशी के वरदानों से, खजानों से सम्पन्न बनाते रहना।'' ऐसे मधुर महावाक्य सुनते, यादप्यार देते और लेते मैं अपने साकार वतन में पहुंच गई।

18.2.83

## सदा उमंग-उत्साह में रहने की युक्तियाँ

सदा सेवा की लगन में मगन बनाने वाले बापदादा बोले:–

''आज सर्व बच्चों के दिलाराम बाप, बाप बच्चों के दिल की आवाज, दिल की मीठी-मीठी बातों का रेसपांड देने के लिए बच्चों के बीच आए हैं। अमृतवेले से लेकर बापदादा चारों ओर के बच्चों के भिन्न-भिन्न राज़ भरे हुए साज सुनते रहते हैं। सारे दिन में कितने बच्चों के और कितने प्रकार के साज़ सुनते होंगे। हरेक बच्चे के भी समय-समय भिन्न-भिन्न साज़ होते हैं। सबसे पहले ज्यादा नैचुरल साज़ कौन सुनता है? नैचुरल वस्तु सदा प्रिय लगती है। तो सब बच्चों के भिन्न-भिन्न साज़ सुनते हुए बापदादा बच्चों केसार में मुख्य बातें सुनते हैं।

सभी बच्चे यथाशक्ति लगन में मगन अवस्था में स्थित होन के लिए वा मगन स्वरुप के अनुभवी मूर्त बनने के लिए अटेन्शन बहुत अच्छा रखते चल रहे हैं। सबकी दिल का एक ही उमंग उत्साह है कि मैं बाप समान समीप रतन बन सदा सपूत बच्चे का सबूत दूँ । यह उमंग उत्साह सर्व के उड़ती कला का आधार है। यह उमंग कई प्रकार के आने वाले विघ्नों को समाप्त कर सम्पन्न बनने में बहुत सहयोग देता है। यह उमंग का शुद्ध और दृढ़ संकल्प विजयी बनाने में विशेष शक्तिशाली शस्त्र बन जाता है। इसलिए सदा दिल में उमंग उत्साह को वा इस उड़ती कला के साधन को कायम रखना। कभी उमंग-उत्साह को कर्म नहीं करना। उमंग है – मुझे

बाप समान सर्व शक्तियों, सर्व गुणों, सर्व ज्ञान के खजानों के सम्पन्न होना ही है – क्योंकि कल्प पहले भी मैं श्रेष्ठ आत्मा बना था। एक कल्प की तकदीर नहीं लेकिन अनेक बार के तकदीर की लकीर भाग्य विधाता द्वारा खींची हुई है। इसी उमंग के आधार पर उत्साह स्वत: होता है। उत्साह क्या होता? ''वाह मेरा भाग्य''। जो भी बाप दादा ने भिन्न-भिन्न टाइटिल दिये हैं। उसी स्मृति स्वरूप में रने से उत्साह अर्थात् खुशी स्वत: ही और सदा ही रहती है। सबसे बड़े ते बड़े उत्साह की बात है कि अनेक जन्म आपने बाप को ढूंढा लेकिन इस समय बाप दादा ने आप लोगो को ढूंढा। भिन्न-भिन्न पर्दों के अन्दर छिपे हुए थे। उन पर्दों के अन्दर से भी ढूंढ लिया ना? बिछुड़कर कितने दूर चले गये। भारत देश को छोड़कर कहाँ चले गये। धर्म, कर्म, देश, रीति-रसम, कितने पर्दों के अन्दर आ गये। तो सदा इसी उत्साह और खुशी में रहते हो ना। बाप ने अपना बनाया या आपने बाप को अपना बनाया। पहले मैसेज तो बाप ने भेजा ना। चाहे पहचानने में कोई ने कितना समय, कोठ ने कितना समय लगाया। तो सदा उमंग और उत्साह में रहने वाली आत्माओं को एक बल एक भरोसे में रहने वाले बच्चों को, हिम्मते बच्चे मददे बाप की सदा ही अनुभव होता रहता है। ''होना ही है'' यह हिम्मत। इसी हिम्ते से मदद के पात्र स्वत: ही बन जाते हैं। और इसी हिम्मत के संकल्प के आगे माया हिम्मतहीन बन जाती है। पता नहीं, होगा या नहीं होग, मैं कर सकूंगा या नहीं, – यह संकल्प करना , माया का आहवान करना है। जब आहवान किया तो माया को नहीं आयेगी। यह संकल्प आना अर्थात् माया को रास्ता देना। जब आप रास्ता ही खोल देते हो तो क्यों नहीं आयेगी। आधाकल्प की प्रीत रखने वाली रास्ता मिलते केसे नहीं आयेगी। इसलिए सदा उमंग उत्साह में रहने वाली हिम्मतेवान आत्मा बनो। विधाता और वरदाता बाप के सम्बन्ध से बालक सो मालिक बन गए। सर्व खजानों के मालिक, जिस खजाने में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं। ऐसे मालिक उमंग उत्साह में न रहेंगे तो कौन रहेगा। यह सलोगन सदा मस्तक में स्मृति रूप में रहे – ''हम ही थे, हम ही हैं और हम ही रहेंगे।'' याद है ना। इसी स्मृति ने यहाँ तक लाया है। सदा इसी स्मृति भव। अच्छा –

आज तो डबल विदेशी, सबसे ज्यादा में ज्यादा दूरदेशवासी, दूर से आने वाले बच्चों से विशेष मिलने के लिए आये हैं। वैसे तो भारत के बच्चे भी सदा अधिकारी हैं ही। फिर भी चान्सलर बन चान्स देते हैं इसलिए भारत में महादानी बनने की रीति-रसम अब तक भी चलती है। सबने अपने-अपने रूप से विश्व सेवा के महायज्ञ में सहयोग दिया। हरेक ने बहुत लगन से अच्छे ते अच्छा पार्ट बजाया। सर्व के एक संकल्प द्वारा विश्व की अनेक आत्माओं कोबाप के समीप आने का सन्देश मिला। अभी इसी सन्देश द्वारा जगी हुई ज्योति अनेको को जगाती रहेगी। डबल विदेशी बच्चों ने अपने दृढ़ संकल्प को साकार में लाया। भारतवासी बच्चों ने भी अनेक नाम फैलाने वाले, सन्देश पहुँचाने वाले विशेष आत्माओं को समीप लाया। कलमधारियों को भी स्नेह ओर सम्पर्क में समीप लाया। कलम की शक्ति और मुख की शक्ति दोनों ही मिलकर सन्देश की ज्योति जगाते रहेंगे। इसके लिए डबल विदेशी बच्चों को और देश में समीप रहने वाले बच्चों को, दोनों को बधाई। डबल विदेशी बच्चों ने पावरफुल आवाज़ फैलाने के निमित्त बनी हुई विशेष आत्माओं को लाया उसके लिए भी विशेष बधाई हो। बाप तो सदा बच्चों के सेवाधारी हैं। पहले बच्चे। बाप तो बैकबोन है ना। सामने मैदान पर तो बच्चे ही आते हैं। मेहनत बच्चों की मुहब्बत बाप की। अच्छा –

ऐसे सदा उमंग उत्साह में रहने वाले, सदा बाप दादा की मददे के पात्र, हिम्मतवान बच्चे, सदा सेवा की लगन में मगन रहने वाले, सदा स्वंय को प्राप्त हुई शक्तियों द्वारा सर्व आत्माओं को शक्तियों की प्राप्ति कराने वाले– ऐसे बाप के सदा अधिकारी वा बालक सो मालिक बच्चों को बापदादा काविशेष स्नेह सम्पन्न यादप्यार और नमस्ते।

जानकी दादी से :– बाप समान भव की वरदानी हो ना। डबल सेवा करती हो। बच्ची की मंसा सेवा की सफलता बहुत अच्छी दिखाई दे रही है। सफलता स्वरूप का प्रत्यक्ष सबूत हो। सभी बाप के साथ-साथ बच्ची के भी गुण गाते हैं। बाप साथ-साथ चक्कर लगाते हैं ना। चक्रवर्ती राजा हो। प्रकृतिजीत की अच्छा ही प्रत्यक्ष पार्ट बजा रही हो अब तो संकल्प द्वारा भी सेवा कापार्ट अच्छा चल रहा है। प्रैक्टिकल सबूत अच्छा है। अभी तो बहुत बड़े बड़े आयेंगे। विदेश का आवाज़ देश वालों तक पहूँचेगा। सभी विदेशी बच्चों ने सर्विस के उमंग उत्साह का अच्छा ही प्रैक्टिकल सबूत दिखाया है। इसीलिए सभी के तरफ से आपको बहुत-बहुत बधाई हो। अच्छा माइक लाया, याद का स्वरूप बनकर सेवा की है। इसलिए सफलता है। अच्छा बगीचा तैयार किया है। अल्लाह अपने बगीचे को देख रहे हैं।

जयन्ती बहन से :– जन्म से लकी और लवली तो हो ही। जन्म ही लक से हुआ है। जहाँ भी जायेंगी वह स्थान भी लकी हो जायेगा। देखो लण्डन की धरती लकी हो गई ना। जहाँ भी चक्कर लगाती हो तो क्या सौगात देकर आती हो। जो भाग्य विधाता द्वारा भाग्य मिला है वह भाग्य बाँटकर आती हो। सभी आपको किस नजर से देखते हैं, मालूम है? भाग्य का सितारा हो। जहाँ सितारा चमकता है वहाँ जगमग हो जाता है। ऐसे अनुभव करती हो ना। कदम बच्ची का और मदद बाप की। फालो फादर तो हो ही लेकिन फालो साथी(जानकी दादी को) भी ठीक किया है। यह भी समान बनने की रेस अच्छी कर रही है। अच्छा –

(न्यूयार्क से स्विंग शैली ने बापदादा को यादप्यार भेजी है।) इसी मधुबन के यादप्यार ने ही उन्हें नया जनम दिया है। उनके ओरीजनल नये जन्म की भूमि मधुबन है। तो बर्थ प्लेज उन्हें कैसे भूलेगा। जितनी शक्ति ली है उस शक्ति के हिसाब से बहुत ही अच्छा

सर्विस का सबूत दिया है। अपने साथियों को अच्छा ही सन्देश देकर समीप लाया है। शेयर होल्डर है। क्योंकि जितनों को भी मैसेज मिलता है। इसके निमित्त उन सबका शेयर इसको मिलता रहता है।

(गायत्री बहन से न्यूयार्क):– गायत्री भी कम नहीं, बहुत अच्छा सर्विस का साधन अपनाया है। जो भी निमित्त बन करके आत्मायें मधुबन तक पहुँचाई, अपनाया है। जो निमित्त बन करके आत्मयें मधुबन तक पहुंचाई तो निमित्त बनने वालों को भी बाप दादा और परिवार की शुभ स्नेह के पुष्प् की वर्षा होती रहती है। जितना ही शैली अच्छी आत्मा है, उतना ही यह जो बच्चा अया (रार्बट मूलर) यह भी बहुत अच्छा सेवा के क्षेत्र में सहयोगी आत्मा है। सच्ची दिल पर साहिब राजी। साफ दिल वाला है। इसलिए बाप के स्नेह को, बाप की शक्ति को सहज कैच कर सका। उमंग उत्साह और संकल्प बहुत अच्छा है। सेवा में अच्छा जम्प लगायेगा। बाप दादा भी निमित्त बने हुए बच्चों को देख हर्षित होते हैं। उनको कहना कि सेवा में उड़ती कला वाले फरिश्ता स्वरूप हो और ऐसे ही अनुभव करते रहना। सर्विस में उड़ती कला वाला बच्चा है। सर्विस करने का उमंग अच्छा है। अच्छा – सभी के सहयोग से सफलता मधुबन तक दिखाई दे रही है। नाम किसका भी नहीं ले रहे हैं। लकिन सब समझना कि हमें बाबा कह रहे हैं। कोई भी कम नहीं है। समझो पहले हम सेवा में आगे हैं। छोटे बड़े सभी ने तन-मन-धन-समय संकल्प सब कुछ सेवा में लगाया है।

मुरली भाई और रजनी बहन से :– बाप दादा के स्नेह की डोर ने खींच लाया ना। सदा अभी क्या याद रहता है? श्वासों श्वासं सेकण्ड-सेकण्ड क्या याद रहता? सदादिल से बाबा ही निकलता है ना। मन की खुशी, याद का अनुभव द्वारा अनुभव की। अभी एकाग्र हो जो सोचेंगे वह सब आगे बढ़ने के साधन हो जायेगा। सिर्फ एक बल एक भरोसे से एकाग्र हो कर के सोचो। निश्चय में एक बल और एक भरोसा, तो जो कुछ होगा वह अच्छा ही होगा। बाप दादा सदा साथ हैं और सदा रहेंगे। बहादुर हो ना। बाप दादा बच्चे की हिम्मत और निश्चय को देख के निश्चय और हिम्मत पर बधाई दे रहे हैं। बेफिकर बादशाह के बच्चे बादशाह हो ना। ड्रामा की भावी ने समीप रत्न तो बना ही दिया है। साथ भी बहुत अच्छा मिला है। साकार का साथ भी शक्तिशाली है। आत्मा का साथ तो है ही बाप। डबल लिफट है। इसलिए बेफिकर बादशाह। समय पर पुण्यात्मा बन पुण्य का कार्य किया है। इसलिए बाप दादा के सहयोग के सदा पात्र हो। कितने पुण्य के अधिकारी बने। पुण्य-स्थान के निमित्त बने। किसी भी रीति से बच्चे का भाग्य बना ही दिया ना। पुण्य की पूँजी इक्टठी है। मुरलीधर का मुरली, मास्टर मुरली है। बाप का हाथ सदा हाथ में है। सदा याद करते और शक्ति लेते रहो।

बाप का खजाना सो आपका, अधिकारी समझकर चलो। बाप दादा तो घर का बालक सो घर का मालिक समझते हैं। परमार्थ और व्यवहार दोनों साथ-साथ हों। व्यवहार में भी साथ रहे। अच्छा।

यू.के. ग्रुप से :- सभी अपने को स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी समझते हो? वैसे भी लण्डन राजधनी है ना। तो राजधानी में रहते हुए अपना राज्य सदा याद रहता है ना। रानी का महल देखते अपने महल को याद आते हैं। आपके महल कितने सुन्दर होंगे, जानते हो ना। ऐसा आपका राज्य है जो अब तक कोई ऐसा राज्य न हुआ है ना होगा। ऐसा नशा है? भल अभी तो सब विनाश हो जायेगा। लेकिन आप तो भारत में आ जायेंगे ना। यह तो पक्का है ना। जहाँ भी ब्राहमण आत्माओं ने इतनी सेवा की है वह पिकनिक स्थान जरूर रहेंगे। आदमशुमारी कम होगी, इतने विस्तार की आवश्यकता नहीं होगी। अच्छा – अपना घर, अपना राज्य, अपना बाप, अपना कर्तव्य सब याद रहे।

प्रश्न:– सदा आगे बढ़ने का साधन क्या है?

उत्तर:- नालेज और सेवा। जो बच्चे नालेज को अच्छी रीति धारण करते हैं औश्र सेवा की सदा रूचि बनी रहती है वह आगे बढ़ते रहते हैं। हजार भुजा वाला बाप आपके साथ है, इसलिए साथी को सदा साथ रखते आगे बढ़ते रहो।

प्रश्न:- प्रवृति में जो सदा समर्पित होकर रहते हैं – उनके द्वारा कौन सी सेवा स्वत: हो जाती है?

उत्तर:- ऐसी आत्माओं के श्रेष्ठ सहयोग से सेवा का वक्ष फलीभूत हो जाता है। सबका सहयोग ही वृक्ष का पानी बन जाता है। जैसे वृक्ष को पानी मिले तो वृक्ष से फल कितना अच्छा निकलता है ऐसे श्रेष्ठ सहयोगी आत्माओं के सहयोग से वृक्ष फलीभूत हो जाता है। तो ऐसे बाप दादा के दिलतख्तनशीन सेवा की धुन में सदा रहने वोले, प्रवृति में भी समर्पित रहने वाले बच्चे हो ना। अच्छा। ओम् शान्ति।

21.2.83

## शान्ति की शक्ति

विश्व परिवर्तन तथा विश्व कल्याण के निमित्त बनाने वाले कल्याण कारी शिव बाबा बोले:–

''आज बाप दादा अमृत वेले चारों ओर बच्चों के पास चक्कर लगाने गये। चक्कर लगाते हुए बाप दादा आज अपनी शक्ति सेना वा पाण्डव सेना सभी की तैयारी देख रहे थे कि कहाँ तक सैना शक्तिशाली शस्त्रधारी एवररेडी हुई है। समय का इंतजार है वा स्वयं सदा ही सम्पन्न रहने का इंतजाम करने वाली है। तो आज बापदादा सैनापति केरूप में सेना को देखने गये। विशेष बात, साइन्स की

शक्ति पर साइलेन्स के शकति की विजय है। तो साइलेन्स की शक्ति संगठित रूप में और व्यकतिगत रूप में कहाँ तक प्राप्त कर ली है। वह देख रहे थे। साइन्स की शक्ति द्वारा प्रत्यक्ष फल रूप में स्व परिवर्तन वायुमण्डल परिवर्तन, वृत्ति परिवर्तन, संस्कार परिवर्तन कहाँ तक कर सकते हैं वा किया है तो आज सेना के हरेक सैनिक की साइलेन्स के शक्ति की प्रयोगशाला चेक की कि कहाँ तक प्रयोग कर सकते हैं।

स्मृति में रहना, वर्णन करना वह भी आवश्यक है लेकिन वर्तमान समय के प्रमाण सर्व आत्मायें प्रत्यक्षफल देखना चाहती हैं। प्रत-यक्ष फल अर्थात् प्रैक्टिकल प्रूफ देखने चाहती हैं। तो तन के ऊपर साइलेन्स की शक्ति काप्रयोग करते हैं। ऐसे ही मन के ऊपर, कर्म के ऊपर, सम्बन्ध सम्पर्क में आने से सम्बन्ध सम्पर्क में क्या प्रयोग होता है, कितनी परसेन्टज में होता है – यह विश्व की आत्मायें भी देखने चाहती हैं। हरेक ब्राहमण आत्मा भी स्व में प्रत्यक्ष प्रूफ के रूप में सदा विशेष से विशेष अनुभव करने चाहती है। रिजल्ट में साइलेन्स की शक्ति का जितना महत्व है। उतना उसे विधि पूर्वक प्रयोग में लाने में भी अभी कम है। चाहना बहुत है, नालेज भी है लेकिन प्रयोग में करते हुए आगे बढ़ते चलो। साइलेन्स शक्ति की प्राप्ति की महीनता अनुभव करते स्व प्रति वा अन्य प्रति कार्य में लगाना, उसमें अभी और विशेष अटेन्शन चाहिए। विश्व की आत्माओं वा सम्बन्ध, सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को महसूसता हो कि शान्ति की किरणें इन विशेष आत्मा वा विशेष आत्माओं द्वारा मिल रही हैं। हरेक से चलता फिरता ''शान्ति यज्ञ कुण्ड'' का अनुभव हो। जैसे आपकी रचना में छोटा सा फायरफलाई दूर से ही अपनी रोशनी का अनुभव कराता है। दूर से ही देखते सब कहेंगे यह फायरफलाई आ रहा है, जा रहा है। ऐसे इस बुद्धि द्वारा अनुभव करें कि यह शान्ति का अवतार शान्ति देने आ गया है। चारों ओर की अशान्त आत्मायें शान्ति की किरणों के आधार पर शान्ति कुण्ड की तरफ खिंची हुई आवें। जैसे प्यास पानी की तरफ स्वत: ही खिंचता हुआ जाता है। ऐसे आप शान्ति के अवतार आत्माओं की तरफ खिंचे हुए आवें। इसी शान्ति की शक्ति का अभी और अधिक प्रयोग करो। शान्ति की शक्ति वायरलेस से भी तेज आपका संकल्प किसी भी आत्मा प्रति पहुंचा सकती है। जैसे साइन्स की शक्ति परिवर्तन भी कर लेती, वृद्धि भी कर लेती है, विनाश भी कर लेती, रचना भी कर लेती, हाहाकार भी मचा देती और आराम भी दे देती। लेकिन साइलेन्स की शक्ति की विशेष यंत्र है – ''शुभ संकल्प'' इस संकल्प के यंत्र द्वारा जो चाहो वह सिद्धि स्वरूप में देख सकते हो। पहले स्व के प्रति प्रयोग करके देखो। तन की व्याधि के ऊपर प्रयोग करके देखो तो शान्ति की शक्ति द्वारा कर्म बन्धन का रूप, मीठे सम्बन्ध के रूप में बदल जायेगा। बन्धन सदा कड़वा लगता है, सम्बन्ध मीठा लगता है। यह कर्मभोग – कर्म का कड़ा बन्धन साइलेन्स की शक्ति से पानी की लकीर मिसल अनुभव होगा। भोगने वाला नहीं, भोगना भोग रही हूँ – यह नहीं लेकिन साक्षी दृष्टा हो इस हिसाब किताब का दृश्य भी देखते रहेंगे। इसलिए तन के साथ-साथ मन की कमजोरी, डबल बीमारी होने के कारण जो कड़े भोग के रूप में दिखाई देता है वह अति न्यारा और बाप का प्यारा होने के कारण डबल शक्ति अनुभव होने से कर्मभोग के हिसाब की शक्ति के ऊपर वह डबल शक्ति विजय प्राप्ति कर लेगी। बीमारी चाहे कितनी भी बड़ी हो लेकिन दुख वा दर्द का अनुभव नहीं करेंगे। जिसको दूसरी भाषा में आप कहते होकि सूली से काँटै के समान अनुभव होगा। ऐसे टाइम में प्रयोग करके देखो। कई बच्चे करते भी हैं। इसी प्रकार से तन पर मन पर, संस्कार पर अनुभव करते जाओ और आगे बढ़ते जाओ। यह रीसर्च करो। इसमें एक दो को नहीं देखो। यह क्या करते, इसने कहाँ दिया है। पुराने करते वा नहीं करते, बड़े नहीं करते छोटे करते, यह नहीं देखो। पहले मैं इस अनुभव में आगे आ जाऊं क्योंकि यह अपने आन्तरिक पुरूषार्थ की बात है। जब ऐसे व्यक्तिगत रूप में इसी प्रयोग में लग जायेंगे। वृद्धि को पाते रहेंगे तक एक एक के शान्ति की शक्ति का संगठित रूप में विश्व के सामने प्रभाव पड़ेगा। अभी फर्स्ट स्टैप विश्व शान्ति की कानफ्रेंस कर निमंत्रण दिया लेकिन शान्ति कीशक्ति का पुंज जब सर्व के संगठित रूप में प्रख्यात होगा तो आपको निमंत्रण आयेंगे कि हे शक्ति, शान्ति के अवतार इस अशान्ति के स्थान पर आकर शान्ति दी। जैसे सेवा में अभी भी जहाँ अशान्ति का मौका (मृत्यु) होता है तो आप लोगों को बुलाते हैं कि आओ आकर शान्ति दो। और यह धीरे-धीरे प्रसिद्ध भी होता जा रहा है कि ब्रहमाकुमारियाँ ही शान्तिदे सकती हैं। ऐसे हर अशान्ति के कार्य में आप लोगों को निमंत्रण आयेंगे। जैसे बीमारी के समय सिवाए डाक्टर के कोई याद नहीं आता ऐसे अशान्ति के कोई भी बातों में सिवाए आप शान्ति-अवतारों के और कोई दिखाई नहीं देगा। तो अभी शक्ति सेना, पाण्डव सेना, विशेष शान्ति की शक्ति काप्रयोग करो। प्रयोग करके दिखाओ। शान्ति की शक्ति का केन्द्र प्रत्यक्ष करो। समझा क्या करना है।

आजकल तो डबल विदेशी बच्चों के निमित्त सभी बच्चों को भी खजाना मिलता रहता है। जहाँ से भी जो सभी बच्चे आये हैं। बाप दादा सभीं तरफ के बच्चों की लगन को देख खुश होते हैं। पाँचो ही खण्डों के भिन्न-भिन्न देश से आये हुए बच्चों को बापदादा देख रहे हैं। सभी कमाल की है। जो सभी ने लक्ष्य रखा था उसी प्रमाण प्रैक्टिकल पुरुषार्थ का रूप भी लाया है। विदेश से टोटल कितने वि.आई.पी. आये हैं? (७५) और भारत में कितने वी.आई.पी. आये थे ?(७००) भारत की विशेषता अखबार वालों को अच्छी रही। और विदेश से ७५ भी आये यह कोई कम नहीं। बहुत आये। दूसरे वर्ष फिर बहुत आयेंगे। अभी गेट तो खुल गया ना आने का। पहले तो विदेश की टीचर्स कहती थीं वी. आई.पी. को लाना बड़ा मुश्किल है। ऐसा तो कोई दिखाई नहींदेता। अब तो दिखाई

दिया ना। मुश्किल है। ऐसा तो कोई दिखाई नहीं देता। अब तो दिखाई दियाना। भले विघ्न पड़े यह तो ब्राहमणों के कार्यें में विघ्न न पड़े तो लगन भी लग न सके। नहीं तो अलबेले हो जायें। इसलिए ड्रामा अनुसार लगन बढ़ाने के लिए विघ्न पड़ते हैं। अभी एक एक द्वारा आवाज़ सुनकर फिर अनेकों में उमंग आयेगा।

बच्चों ने अच्छी कमाल की है। सर्विस मे सबूत अच्छा दिखाया है। सेवा का चांस दिलाने के निमित्त तो बन गये ना। एक द्वारा सहज ही अनेको तक आवाज तो फैला ना। अमेरिका वालों ने अच्छी मेहनत की। हिम्मत अच्छी की, जयादा से ज्यादा आवाज़ फैलाने वाली निमित्त आत्मा को ड्रामा अनुसार विदेश वालों ने ही लाया ना। भारतवासी बच्चों ने भी मेहनत बहुत अच्दी की। उस मेहनत का फल संख्या अच्छी आई। अभी भारत की विशेष आत्मायेयं भी आयेंगी। अच्छा।

ऐसे सर्व विदेश से आये हुए बच्चों को और भारत के चारों तरफ के बच्चों को जो सब एक ही विशेष शुद्ध संकल्प में हैं कि विश्व के कोने-कोने में बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेंगे – ऐसे शुभ संकल्प लेने वाले, विश्व परिवर्तन विश्व कल्याणकारी, सर्वश्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों के साथ अव्यक्त बापदादा की मुलाकात –

१. वरदान भूमि पर आकर वरदान लिया? सबसे बड़े ते बड़ा वरदान है सदा अपने को बाप द्वारा बाप के साथ का अनुभव करना। सदा बाप की याद में अर्थात् सदा साथ मेंरहना। तो सदा ही खुश रहेंगे कभी भी कोई भी कोई बात संकल्प में आये तो बाप के साथ में सब समाप्त हो जायेगा और खुशी में झूमते रहेंगे। तो सदा खुश रहने का यह तरीका याद रखना और दूसरों को भी बताते रहना। दूसरों को भी खुशी में रहने का साधन देना। तो आपको सभी आत्मायें खुशी का देवता मानेंगी। क्योंकि विश्व में आज सबसे ज्यादा खुशी की आवश्यकता है। वह आप देते जाना। अपना टाइटिल याद रखना कि मैं खुशी का देवता हूँ।

याद और सेवा इसी बैलन्स द्वारा बाप ब्लैसिंग मिलती रहेगी। बैलेन्स सबसे बड़ी कला है। हर बात में बैलेन्स हो तो नम्बरवन सहज ही बन जायेंगे। बैलेन्स ही अनेक आत्माओं के आगे ब्लिसफुल जीवन का साक्षात्कार करायेगा। बैलेन्स को सदा स्मृति में रखतेसर्व प्राप्तियों का अनुभव करते स्वयं भी आगे बढ़ो और औरों को भी बढ़ाओ।

सदा इसी स्मृति में रहो कि बाप को जानने वाली, बाप को पाने वाली कोटो में कोई जो गाई हुई आत्मायें हैं, वह हम हैं। इसी खुशी में रहो तो आपके यह चेहरे चलते फिरते सेवा-केन्द्र हो जायेंगे। जैसे सर्विस सेन्टर पर आकर बाप का परिचय लेते हैं वैसे आपके हर्षित चेहरे से बाप का परिचय मिलता रहेगा। बापदादा हर बच्चे को ऐसा ही योग्य समझते हैं। इतने सब सेवा-केन्द्र बैठे हैं। तो सदा ऐसे समझो चलते फिरते खाते पीते हमको बाप की सेवा अपनी चलन से व चेहरे से करनी है। तो सहज ही निरंतर योगी बन जायेंगे। जो बच्चे आदि से सेवा में उमंग उत्साह कासहयोग देते रहे हैं, ऐसी आत्माओं को बापदादा भी सहयोग देते हुए २१ जन्म आराम से रखेंगे। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। खाओ, पिओ और स्वर्ग का राज्य भाग्य भोगो। आधाकल्प मेहनत शब्द ही नहीं होगा। ऐसी तकदीर बनाने आए हो।

कुमारों प्रति– कुमार जीवन में एनर्जी बहुत होती है। कुमार जो चाहे वह कर सकते हैं। इसलिए बापदादा कुमारों को देख विशेष खुश होते हैं कि अपनी एनर्जी डिस्ट्रक्शन के बजाए कनस्ट्रक्शन के कार्य में लगाया। एक-एक कुमार विश्व को नया बनाने में अपनी एनर्जी को लगा रहे हैं। कितना श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं। एक कुमार १० का कार्य कर सकते हैं। इसलिएकुमारों पर बापदादा को नाज़ है। कुमार जीवन में अपनी जीवन सफल कर ली। ऐसी विशेष आत्मायें हो ना। बहुत अच्छा समय पर जीवन का फैसला किया। फैसला करने में कोई गलती तो नहीं की है ना। पक्का है ना। कोई गलत कहकर खींचे तो? चाहे दुनिया की अक्षौणी आत्मायें एक तरफ हो जाएं, आप अकेले हो फिर क्या होगा? बोलो मैं अकेला नही हूँगा, बाप मेरे साथ है। बापदादा खुश होते हैं – स्वयं की भी जीवन बनाई और अनेको की जीवन बनाने के निमित्त बने हो। अच्छा –

पत्रों के उत्तर देते हुए, बापदादा ने सभी बच्चों प्रति टेप में याद प्यार भरी –

चारों ओर के सभी सिकीलधे स्नेही, सहयोगी, सर्विसएबुल बच्चों के पत्र तो क्या लेकिन दिल के मीठे-मीठे साजों भरे गीत बाप-दादा ने सुने। जितना बच्चे दिल से याद करते हैं उससे पदमगुणा ज्यादा बापदादा भी बच्चों को याद करते, प्यार करते और इमर्ज करके टोली खिलाते। अभी भी सामने टोली रखी है। सभी बच्चे बाप के सामने हैं। केक काट रहे हैं औरसभी बच्चे खा रहे हैं। जो भी बच्चों ने समाचार लिखा है, अपनी अवस्था व सर्विस का, बापदादा ने सुने। सर्विस का उमंग उत्साह बहुत अच्छा है। अभी थोड़ा बहुत जो माया के विघ्न देखते हो, वह भी नथिंग न्यू। माया सिर्फ पेपर लेने आती है। माया से घबराओ मत। खिलौना समझकर खेलो तो माया वार नहीं करेगी। लेकिन आराम से विदाई ले सो जायेगी। इसलिए ज्यादा नहीं सोचो यह क्या हुआ, हो गया फुल-स्टाप लगाओ और आगे जाकर पदमगुणा जो कुछ रहे गया वह भर लो।। बढ़ते चलो और बढ़ाते चलो। बापदादा साथ है, माया की चाल चलने वाली नहीं है इसलिए घबराओ नहीं। खुशी में नाचो, गाओ। अब तो अपना राज्य आया कि आया। हे स्वराज्य अधि-कारी, विश्व का राज्य भाग्य आपका इंतजार कर रहा है। अच्छा– सर्व को बहुत बहुत यादप्यार और निर्विघ्न भव कावरदान बाप-

दादा दे रहे हैं। जो बच्चे स्थूल धन की कमी के कारण पहुंच नहीं सकते उन्हें भी बापदादा याद दे रहे हैं। भल धन कम है लेकिन हैं बादशाह। क्योंकि आजकल के राजाओं के पास जो नहीं है वह इन्हीं के पास अविनाशी और जन्म -जन्म के लिए जमा है। बापदादा ऐसे वर्तमान बेगमपुर के बादशाह और भविष्य विश्व के बादशाहों को बहुत बहुत यादप्यार देते हैं। ऐसे बच्चे दिल से यहाँ है शरीर से वहाँ हैं। इसलिए बापदादा सम्मुख बच्चों को देख सम्मुख यादप्यार देते हैं। अच्छा – ओम् शान्ति।

प्रश्न :– परखने की शक्ति किस आधार पर प्राप्त हो सकती है?

उत्तर:- क्लीयर बुद्धि। ज्यादा बातें सोचने के बजाए एक बाप की याद में रहो, बाप से क्लीयर रहो तो परखने की शक्ति प्राप्त हो जायेगी और उसके आधार पर सहज ही हर बात का निर्णय कर लेंगे। जिस समय जैसी परिस्थिति, जैसा सम्पर्क सम्बन्ध वाले का मूड, उसी समय पर उस प्रमाण चलना, उसको फौरन परख लेना यह भी बहुत बड़ी शक्ति है।

प्रश्न:– शमा पर फिदा होने वाले सच्चे परवाने की निशानी क्या होगी?

उत्तर :- शमा पर जो फिदा हो चुके वह स्वयं भी शमा के समान हो गये। समा गये तो समान हो गये। जैसे शमा सबको रास्ता बताती है ऐसे शमा समान रोशनी द्वारा रास्ता बताने वाले। रास्ते में भटकने वाले नहीं। यह करें वा वह करें, यह क्वेश्चन समाप्त। फुलस्टाप आ जाता तो याद और सेवा इसी में रहो, चक्र सब समाप्त। कोई भी चक्कर रहा हुआ होगा तो चक्र लगाने जायेंगे। कभी सम्बन्ध का चक्र कभी अपने स्वाभाव संस्कार का चक्र अगर सब चक्र समाप्त हो गये, पूरा फिदा हो गये तो फिर फिदा होना अर्थात् जल मरना। उन्हों की सिवाए शमा के और कुछ नहीं।

24.2.83

## दिलाराम बाप का दिलरूबा बच्चों से मिलन

सदा सर्व बच्चों की विशेषता देखने वाले, दया और प्यार के सागर शिव बाबा बोले :-

''आज विशेष मिलन मनाने के लिए सदा उमंग उल्लास में रहने वाले बच्चों से मिलने के लिए आये हैं। दिन रात यही संकल्प रहता है कि मिलन मनाना है। आकार रूप में भी मिलन मनाते फिर भी साकार रूप द्वारा मिलने की शुभ आशा सदा ही रहती है, सब दिन गिनती करते रहते कि आज हमको मिलना है, यह संकल्प हर बच्चे का बापदादा के पास पहुँचता रहता है और बापदादा भी यही रेसपान्ड देने के लिए हर बच्चे को याद करते रहते हैं। इसलिए आज मुरली चलाने नहीं लेकिन मिलने का सकंल्प पूरा करने के आऐ हैं। कोई-कोई बच्चे दिल ही दिल में मीठे-मीठे उल्हनें भी देते हैं कि हमें तो बोल द्वारा मुलाकात नहीं कराई। बापदादा भी हरेक बच्चे से दिल भर-भर के मिलने चाहते हैं। लेकिन समय और माध्यम को देखना पड़ता है। आकारी रूप से एक ही समय पर जितने चाहें जितना समय चाहें उतना समय और उतने सब मिल सकते हैं उसके लिए र्टन आने की बात नहीं है। लेकिन जब साकार सृष्टि में साकार तन द्वारा मिलन होता है तो साकारी दुनिया और साकार शरीर के हिसाब को देखना पड़ता है। आकारी वतन मे कभी दिन मुकरर होता है क्या कि फलाना ग्रुप फलाने दिन मिलेगा वा एक घण्टे के बाद आधा घण्टे के बाद मिलने के लिए आना। यह बन्धन आपके वा बाप के सूक्ष्मवतन में सूक्ष्म शरीर में नहीं है। आकारी रूप से मिलन मनाने के अनुभवी हो ना। वहाँ तो भल सारादिन बैठे जाओ कोई उठाएगा नहीं यहाँ तो कहेंगे अभी पीछे जाओ, अभी आगे जाओ। फिर भी दोनों मिलना मीठा है। आप डबल विदेशी बच्चे वा देश में रहने वाले बच्चे जो साकर रूप में ड्रामा अनुसार पालना वा प्रैक्टिकल स्वरूप नहीं देख पाए हैं। ऐस बहुत समय से ढूंढने पर फिर से आकर मिले हुए बच्चों को ब्रहमा बाप बहुत याद करते हैं। ब्रहमा बाप ऐसे सिकीलधे बच्चों का विशेष गुणगान करते हैं कि आए भल पीछे हैं लेकिन आकार रूप द्वारा भी अनुभव साकार रूप का करते हैं ऐसे अनुभव के आधार से बोलते हैं कि हमें ऐसा नहीं लगता कि साकार को हमने नहीं देखा। साकार में पालना ली है और अब भी ले रहे हैं। तो आकार रूप में साकार का अनुभव करना यह बुद्धि की लगन का, स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप है। ऐसे लगता है आकार में भी साकार को देख रहे हैं। ऐसे अनुभव करते हो ना। तो यह बच्चों के बुद्धि का चमत्कार का सबूत है। और दिलाराम बाप के समीप दिलाराम के दिलरूबा बच्चे हैं, यह सबूत है। दिलरूबा बच्चे हो ना। दिल रूबा पर सदा क्या गीत बजता है? वाह बाबा, वाह मेरा बाबा।

बापदादा हर बच्चे को याद करते हैं। ऐसे नहीं समझना इनको याद किया, मेरे को पता नहीं याद किया वानहीं। इनसे ज्यादा प्यार है मेरे से कम प्यार है, नहीं। आप सोचो ५ हजार वर्ष के बाद बापदादा को बिछड़े हुए बच्चे मिले हैं तो ५ हजार वर्ष का इक्ट्ठा प्यार हर बच्चे को मिलेगा ना। तो ५हजार वर्ष काप्यार ५-६ वर्ष में या १०-१२ वर्ष में दपेना तो कितना स्टाक थोड़े समय में देंगे। ज्यादा से ज्यादा दें तब तो पूरा हो। इतना प्यार का स्टाक हरेक बच्चे के लिए बाप के पास है। प्यार कम हो नहीं सकता।

दूसरी बात कि बापदादा सदा बच्चों की विशेषता देखता। चाहे कोई समय बच्चे माया के प्रभाव कारण थोड़ा डगमग होने का खेल भी करते हैं। फिर भी बापदादा उस समय भी उसी नजर से देखते कि यह बच्चा आया हुआ विघ्न लगन से पार कर फिर भी विशेष आत्मा बन विशेष कार्य करने वाला है। विघ्न में भी लगन रूप को ही देखते हैं। तो प्यार कम कैसे होगा। हरेक बच्चे से ज्यादा से ज्यादा सदा प्यार है और हर बच्चा सदा ही श्रेष्ठ है। समझा।

पार्टियों से न्यूयार्क :– बाप का बनना अर्थात् विशेष आत्मा बनना। जब से बाप के बने उस घड़ी से विश्व के अन्दर सर्व से श्रेष्ठ गायन योग्य और पूज्यनीय आत्मा बने। अपनी मान्यता अपना पूजन फिर से चैतन्य रूप में देख भी रहे हो और सुन भी रहे हो। ऐसे अनुभव करते हो? कहाँ भारत और कहाँ अमेरिका लेकिन बाप ने कोने से चुनकर एक ही बगीचे में लाया। अभी सब कौन हो? अल्लाह के बगीचे के रूहे गुलाब। यह तो नाम लेना पड़ता है फलाना देश, फलाना देश, वैसे एक ही बगीचे के, एक ही बाप की पालना में आने वाले, रूहे गुलाब हो। अभी ऐसे महसूस होता है ना हम सब एक के हैं। और हम सब एक रास्ते पर एक मंजिल पर जाने वाले हैं। बाप भी हरेक को देख हर्षित होते हैं। सबकी शुभ भावना, सबके सेवा की अथक लगन ने दृढ़ संकल्प ने प्रत्यक्ष सबूत दिया। चारों ओर के उमंग उत्साह के सहयोग ने रिजल्ट अच्छी दिखाई है। बाहर का आवाज भारत वालों को जगाएगा। इस-लिए बापदादा मुबारक देते हैं।

२. बारबेडोज– बापदादा सदा बच्चों को नम्बरवन बनने का साधन बताते हैं। चाहे कितना भी कोई पीछे आए लेकिन आगे जाकर नम्बरवन ले सकता है। ऐस तो नहीं सोचते हो पता नहीं हमारा ऊंचा पार्ट होगा या नहीं, हम आगे कैसे जायेंगे। बापदादा केपास चाहे पीछे आने वाले हों, चाहे किस भी देश के हों, चाहे किस भी धर्म के हों, किस भी मान्यता के हो लेकिन सबके लिए एक ही फुल अधिकार है। बाप एक है तो हक भी एक जैसा है। सिर्फ हिम्मत और लगन की बात है। कभी भी हिम्मतहीन नहीं बनना। चाहे कोई कितना भी दिलशिकस्त बनाए, कहे पता नहीं आपको क्या हुआ है, कहाँ चले गये हो लेकिन आप उनकी बातों में नहीं आना। पक्का जान बच्चे को अधिकारी आत्मा समझते हैं। जितना जो ले उसके लिए कोई रूकावट नहीं। अभी कोई सीट्स बुक नहीं हुई है। अभी सब सीट खाली हैं। सीटी बजी ही नहीं है। इसलिए हिम्मत रखते रहेंगे तो बाप भी पदमगुणा मदद देते रहेंगे।

३. कैनाडा – सदा उड़ती कला में जान का आधार क्या है? डबल लाइट। तो सदा उड़ते पंछी हो ना। उड़ता पंछी कभी किसके बन्धन में नहीं आता। नीचे आयेंगे तो बन्धन में बधेंगे। इसलिए सदा ऊपर उड़ते रहो। उड़ते पंछी अर्थात् सर्व बन्धनों से मुक्त, जीवन मुक्त। कैनाडा में साइन्स भी उड़ने की कला सिखाती है ना। तो कैनाडा निवासी सदा ही उड़ते पंछी हैं।

४. सैनफ्रासिसको – सभी अपने को विश्व के अन्दर विशेष पार्ट बजाने वाले हीरो एक्टर समझकर पार्ट बजाते हो? (कभी-कभी) बापदादा को बच्चों का कभी -कभी शब्द सुनकर आश्चर्य लगता है जब सदा बाप का साथ है तो सदा उसकी ही याद होगी ना। बाप के सिवाए और कौन है जिसको याद करते हो। औरों को याद करते-करते क्या पाया और कहाँ पहुँचे। इसका भी अनुभव है। जब यह भी अनुभव कर चुके तो अब बाप केसिवाए और याद आ ही क्या सकता। सर्व सम्बन्ध एक बाप से अनुभव किया है या कोई रह गया है? जब एक द्वारा सर्व सम्बन्ध का अनुभव कर सकते हो तो अनेक तरफ जाने की आवश्यकता ही नहीं। इसको ही कहा जाता है एक बल एक भरोसा। अच्छा – सभी ने अच्छी मेहनत कर विशेष आत्माओं को सम्पर्क और लाया, जिन्होंने भी सेवा में सहयोग दिया उस सहयोग कारिर्टन अनेक जन्मों तक सहयोग प्राप्त होता रहेगा। एक जन्म की मेहनत और अनेक जन्म मेहनत से छूट गये। सतयुग में मेहनत थोड़े ही करेंगे। बापदादा बच्चों की हिम्मत औरनिमित्त बनने का भाव देखकर खुश होते हैं। अगर निमित्त भाव से नहीं करते तो रिजल्ट भी नहीं निकलती। अच्छा

27.2.83

## संगम युग पर श्रृंगारा हुआ मधुर अलौकिक मेला

स्नेह का जादू लगाने वाले बच्चों प्रति बाप दादा बोले :-

''आज बा और बच्चे मिलन मेला मना रहे हैं। मेंले में बहुत ही वैरायटी और सुन्दर-सुन्दर वस्तु बहुत सुन्दर सजावट और एक दो में मिलना होता है। बापदादा इस मधुर मेले में क्या देख रहे हैं, ऐसा अलौकिक श्रृंगारा हुआ मेला सिवाय संगमयुग के कोई मना नहीं सकता। हरेक, एक दो से विशेष श्रृंगारे हुए अमूल्य रतन हैं। अपने श्रृंगार को जानते हो ना। सभी के सिर पर कितना सुन्दर लाइट का ताज चमक रहा है। इसी लाइट के क्राउन के बीच आत्मा की निशानी कितनी चमकती हुई मणि मुआफिक चमक रही है। अपना ताजधारी स्वरूप देख रहे हो। हरेक दिव्य गुणों के श्रृंगार से कितने सुन्दर सजी-सजाई मूर्त हो। ऐसा सुन्दर श्रृंगार, जिससे विश्व की सर्व आत्मायें आपके तरफ न चाहते हुए भी स्वत: ही आकर्षित होती हैं। ऐसा श्रेष्ठ अविनाशी श्रृंगार किया है? जो इस समय के श्रृंगार के यादगार आपके जड़ चित्रों को भी सदा ही भक्त लोग सुन्दर से सुन्दर सजाते रहेंगे। अभी का श्रृंगार आधा कल्प चैतन्य देव-आत्मा के रूप में श्रृंगारे जायेंगे और आधाकल्प जड़ चित्रों के रूप में श्रृंगारे जायेंगे। ऐसा अविनाशी श्रृंगार बापदादा द्वारा सर्व बच्चों का अभी हो गया है। बापदादा आज हर बच्चे के तीनों ही स्वरूप वर्तमान और अपने राज्य का देव आत्मा का और फिर भक्ति मार्ग में यादगार चित्र, तीनों ही स्वरूप हरेक बच्चे के देख हर्षित हो रहे हैं। आप सब भी अपने तीनों रूपों को जान गये हो ना। तीनों ही अपने रूप नालेज के नेत्र द्वारा देखे हैं ना।

आज तो बापदादा मिलने का उल्हाना पूरा करने आये हैं। कमाल तो बच्चों की है जो निरबन्धन को भी बन्धन में बाँध देते हैं। बाप-दादा को भी हिसाब सिखादेते कि इस हिसाब से मिलो। तो जादूगर कौन हुए – बच्चे वा बाप? ऐसा स्नेह का जादू बच्चे बाप को

लगाते हैं जो बाप को सिवाए बच्चों के और कुछ सूझता ही नहीं। निरन्तर बच्चों को याद करते हैं। तुम सब खाते हो तो भी एक का आहवान करते हो। तो कितने बच्चों के साथ खाना पड़े। कितने बारी तो भोजन पर बुलाते हो। खाते हैं, चलते हैं, चलते हुए भी हाथ में हाथ देकर चलते, सोते भी साथ में हैं। तो अब इतने अनेक बच्चों साथ खाते,सोते,चलते तो और क्या फुर्सत होगी। कोई कर्म करते तो भी यही कहते कि काम आपका है, निमित्त हम हैं। करो कराओ आप, निमित्त हाथ हम चलाते हैं। तो वह भी करना पड़े ना। औरफिर जिस समय थोड़ा बहुत तूफान आता तो भी कहते आप जानो। तूफानों को मिटाने का कार्य भी बाप को देते। कर्म का बोझ भी बाप को दे देते। साथ भी सदा रखते, तो बड़े जादूगर कौन हुए? भुजाओ के सहयोग बिना तो कुछ हो नहीं सकता। इसलिए ही तो माला जपते हैं ना। अच्छा –

आस्ट्रेलिया निवासी बच्चों ने भी बहुत अच्छा त्याग किया है और हर बार त्याग करते हैं। सदा ही लास्ट सो फास्ट जाते और फर्स्ट आते हैं। जितना ही वह त्याग करते हैं, औरों को आगे करते हैं उतना ही जितना भी मिलतेम रहते उन सब का थोड़ा -थोड़ा शेयर आस्ट्रेलिया वालों को भी मिल जाता है। तो त्याग किया या भाग्य लिया। और फिर साथ-साथ यू.के. का भी बड़ा ग्रुप है। यह दोंनों ही पहले-पहले के निमित्त बने हुए सेन्टर्स हैं और विशाल सेन्टर्स हैं। एक से अनेक स्थानों पर बाप को प्रत्यक्ष करने वाले बच्चे हैं। इसलिए दोनों ही (आस्ट्रेलिया और यू.के.) बड़ों को औरों को आगे तो रखना पड़ेगा ना। दूसरों की खुशी में आप सब खुश हो ना। जहाँ तक देखा गया है दोनों ही स्थान के सेवाधारी सहयोगी, स्नेही बच्चे सब बात में फराखदिल हैं। इस बात में भी सहयोगी बनने में महादानी हैं। बापदादा को सब बच्चे याद है। सबसे मिल लेंगे, बापदादा को तो खुशी होती है कितना दूर-दूर से बच्चे मिलने के उमंग से अपने स्वीट होम में पहुँच जाते हैं। उड़ते-उड़ते पहुँच जाते हो। भले स्थूल में किसी भी देश के हैं लेकिन हैं तो सब एक देशी। सब ही एक हैं। एक बाप, एक देश, एक मत और एक रस स्थिति में स्थित रहने वाले। यह तो निमित्त मात्र देश का नाम लेकर थोड़ा समय मिलने के लिए कहा जाता है। हो सब एक देशी। साकार के हिसाब में भी इस समय तो सब मधुवन निवासी हैं। मधुवन निवासी अपने को समझना अच्छा लगता है ना।

नये स्थान पर सेवा की सफलता का आधार :– जब भी किसी नये स्थान पर सेवा शुरू करते हो तो एक ही समय पर सर्व प्रकार की सेवा करो। मंसा में शुभ भावना, वाणी में बाप से सम्बन्ध जुड़वाने और शुभ कामना के श्रेष्ठ बोल और सम्बन्ध सम्पर्क में आने से स्नेह और शान्ति के स्वरूप से आकर्षित करो। ऐसे सर्व प्रकार की सेवा से सफलता को पायेंगे। सिर्फ वाणी से नहीं लेकिन एक ही समय साथ-साथ सेवा हो। ऐसा प्लैन बनाओ। क्योंकि किसी भी सर्विस करने के लिए विशेष स्वयं को स्टेज पर स्थित करना पड़ता है। सेवा में रिजल्ट कुछ भी हो लेकिन सेवा के हर कदम में कल्याण भरा हुआ है, एक भी यहाँ तक पहुँच जाए यह भी सफ-लता तो समाई हुई है ही। अनेक आत्माओं के भाग्य की लकीर खींचने के निमित्त हैं। ऐसी विशेष आत्मा समझकर सेवा करते चलो। अच्छा – ओम् शान्ति।

1.3.83

## विश्व के हर स्थान पर आध्यात्मिक लाइट और ज्ञान जल पहुंचाओ

सदा एकरस स्थिति में स्थित करने वाले अव्यक्त बापदादा बोले:–

‘‘आज बापदादा वतन में रूह-रिहाण कररहे थे। साथ-साथ बच्चों की रिमझिम भी देख रहे थे। वर्तमान समय मधुबन वरदान भूमि पर कैसे बच्चों की रिमझिम लगी हुई है वह देख-देख हर्षा रहे थे। बापदादा देख रहे थे कि मधुबन पावर हाउस से चारों ओर कितने कनेक्शन्स गये हुए हैं। जैसे स्थूल पावर हाउस से अनेक तरफ लाइट के कनेक्शन जाते हैं। ऐसे इस पावर हाउस से कितने तरफ कनेकशन गये हैं। विश्व के कितने कोनों मे लाइट के कनेक्शन गये हैं और कितने कोनों में अभी कनेक्शन नहीं हुआ है। जैसे आजकल की गवर्मेन्ट भी यही कोशिश करती है कि अपने राज्य में सभी कोनों में सभी गाँवों में चारों तरफ लाइट और पानी का प्रबन्ध जरूर हो। तो पाण्डव गवर्मेन्ट क्या कर रही है। ज्ञान गंगायें चारों आरे जा रही हैं पावर हाउस से चारों ओर लाइट का कने-क्शन जा रहा है। जैसे ऊपर से किसी भी शहर को या गाँव को देखो तो कहाँ-कहाँ रोशनी है। नजदीक की रोशनी है या दूर-दूर है, वह दृश्य स्पष्ट दिखाई देता है। बापदादा भी वतन से दृश्य देख रहे थे कि कितने तरफ लाइट है और कितने तरफ अभी तक लाइट नहीं पहुँची है। रिजल्ट को तो आप लोग भी जानते हो कि देश विदेश में अभ तक कई स्थान रहे हुए हैं जहाँ अभी कनेक्शन्स देने हैं। जैसे लाइट और पानी बिगर उस स्थान की वैल्यु नहीं होती। ऐसे जहाँ आध्यात्मिक लाइट और ज्ञान जल की पूर्ति नहीं हुई है वहाँ की चैतन्य आत्मायें किस स्थिति में है। अंधकार में प्यास में भटक रहींहैं, तड़प रहीं हैं। ऐसे आत्माओं की वैल्यु क्या बताते हो? चित्र बनाते हो ना कौड़ी तुल्य और हीरे तुल्य। लाइट और ज्ञान जल मिलने से कौड़ी से हीरा बन जाते हैं। तो वैल्यु बढ़ जाती है ना। बापदादादेख रहे थे कि आये हुए देश विदेश से बच्चे पावर हाउस से विशेष पावर लेकर अपने अपने स्थान पर जा रहे हैं।

एक तरफ तो बच्चों के स्नेह में बापदादा समझते हैं कि मधुबन अर्थात् बापदादा के घर का श्रृंगार जा रहे हैं। जब भी बच्चे मधुबन में आते हैं तो मधुबन की रौनक या स्वीट होम की झलक क्या हो जाती है। बच्चे भी महसूस करते हैं कि मधुबन की रौनक बढ़ाने

वाले हमारे स्नेही साथी आये हैं। जैसे आप लोग वहाँ याद करते हो, चलते फिरते उठते बैठते मधुबन की स्मृति सदा ताजी रहती है वैसे बापदादा और मधुबन निवासी भी आप सबको याद करते हैं। स्नेह के साथ-साथ सेवा भी विशेष सबजेक्ट है- इसलिए स्नेह से तो समझते हैं यहाँ ही बैठ जाएँ। लेकिन सेवा के हिसाब से चारों ओर जाना ही पड़े। हाँ ऐसा भी सयम आयेगा जो जाना नहीं पड़ेगा लेकिन एक ही स्थान पर बैठे-बैठे चारों ओर के परवाने स्वत: शमा पर आयेंगे। यह तोछोटा सा सैम्पुल देखा कि आबू हमारा ही है। अभी तो किराये पर मकान लेने पड़े ना। फिर भी थोड़ी सी रौनक देखी। ऐसा समय आयेगा जो चारों ओर फरिश्ते नजर आयेंगे। अभी मुख द्वारा सेवा का पार्ट चल रहा है और अभी कुछ रहा हुआ है इसलिए दूर-दूर जाना पड़ता है। अभी श्रेष्ठ संकल्प की शक्तिशाली सेवा जो पहले भी सुनाई है, अन्त में वही सेवा स्वरूप का स्पष्ट दिखाई देगा। हमें कोई बुला रहा है कोई दिव्य बुद्धि द्वारा, शुभ संकल्प का बुलावा हो रहा है, ऐसे अनुभव करेंगे। कोई दिव्य दृष्टि द्वारा बाप और स्थान को देखेंगे। दोनों प्रकार के अनुभवों द्वारा बहुत तीव्रगति से अपने श्रेष्ठ ठिकाने पर पहुँच जायेंगे। इस वर्ष क्या करेंगे ?

प्रयत्न अच्छा किया है। इस वर्ष रहे हुए स्थानों को लाइट तो देंगे ही। लेकिन हर स्थान की विशेषता इस वर्ष यही दिखाओ कि हर सेवा केन्द्र उसमें भी विशेष बड़े-बड़े केन्द्र जो हैं उसमें यह लक्ष्य रखो जैसे कभी धर्म सम्मेलन करते हो तो सभी धर्म वाले इकट्ठे करते हो या राजनीतिक को बुलाते हो, साइंस वालों को विशेष बुलाते हो, अलग-अलग प्रकार के स्नेह मिलन करते हो तो इस वर्ष हर स्थान पर सर्व प्रकार के विशेष आक्यूपेशन वाले, सम्बन्ध में आने वाले तैयार करो। तो जैसे अभी ऐसे कहते हैं कि यहाँ काले गोरे सब प्रकार की वैरायटी है। एक स्थान पर सर्व रंग, देश, धर्म वाले हैं, ऐसे यह कहें कि यहाँ सर्व आक्यूपेशन वाले हैं। विशेष आत्मायें एक ही गुलदस्ते में वैरायटी फूलों के मिसल दिखाई दें। हर सेन्टर पर हर आक्यूपेशन वाली विशेष आत्माओं कासंगठन हो। जो दुनिया में यह आवाज बुलन्द हो कि यह एक बाप एक ही स्त्य ज्ञान सर्व आक्यूपेशन वालों के लिए कितना सहज और सरल है। अर्थात् हर सेवा स्थान की स्टेज पर सर्व आक्यूपेशन वाले इकट्ठे दिखाई दें। कोई भी आक्यूपेशन वाला रह न जाएँ। गरीब से लेकर साहूकार तक, गाँव वालों से लेकर बड़े शहर वाले तक, मजदूर से लेकर बड़े से बड़े उद्योगपति तक सर्व प्रकार की विशेष आत्माओं की अलौकिक रौनक दिखाई दे। जिससे कोई भी यह नहीं कह सके कि क्या यह ईश्वरीय ज्ञान सिर्फ इन्हीं के लिए है। सर्व का बाप सर्व के लिए है – बच्चे से लेकर परदादे तक सभी ऐसा अनुभव करें कि विशेष हमारे लिए यह ज्ञान है जैसे आप सभी ब्राहमणों के मन से, दिल से एक ही आवाज निकलती है। कि हमारा बाबा है ऐसे विश्व के कोने-कोने से, विश्व के हर आक्यूपेशन वाली आत्मा दिल से कहे कि हमारे लिए बाप आये हैं, हमारे लिए ही यह ज्ञान सहारा है। ज्ञान दाता और ज्ञान दोनों के लिए सब तरफ से सब प्रकार की आत्माओं से यह ही आवाज निकले। वैसे सर्व आक्यूपेशन वालों की सेवा करते भी रहते हो लेकिन हर स्थान पर सब वैरायटी हो। औरफिर ऐसे वैरायटी आक्यूपेशन वालों का गुलदस्ता बापदादा के पास ले आओ। तो हर सेवाकेन्द्र विश्व की सर्व आत्माओं केसंगठन का एक विशेष चैतन्य म्यूजियम हो जायेगा। समझा। जो भी सम्पर्क में हैं। उन्हीं को सम्बन्ध में लाते हुए सेवा की स्टेज पर लाओ। समय प्रतिसम जो भी वी.आई.पीज. वा पेपर्स वाले आये हैं उनहीं को सेवा की स्टेज पर लाते रहो तो मुख से बोलने से भी वह मुख का बोल उन आत्माओं के लिए ईश्वरीय बन्धन में बन्धने का साधन बन जाता है। एक बार बोला कि बहुत अच्छा है। और फिर सम्बन्ध से दूर हो गये हो तो भूल जाते हैं। लेकिन बार-बार बहुत अच्छा, बहुत अच्छा कहते रहें अनेकों के सामने, तो वह बोल भी उन्हीं को अच्छा बनने काउत्साह बढ़ाता है। और साथ-साथ सूक्ष्म नियम भी है कि जितनों पर प्रभाव पड़ता है उन आत्माओं का शेयर उनको मिल जाता हे। अर्थात् उन्हीं के खाते में पुण्य की पूंजी जमा हो जाती है। और वही पुण्य की पूंजी अर्थात् पुण्य का श्रेष्ठ कर्म श्रेष्ठ बनने के लिए उन्हीं को खींचता रहेगा। इसलिए जो अभी डायरेक्ट बाप की भूमि से कुछ न कुछ ले गये हैं चाहे थोड़ा, चाहे बहुत लेकिन उन्हीं से दान कराओ। अर्थात् सेवा कराओ। तो जैसे स्थूल धन का फल सकामी अल्पकाल का राज्य मिलता है वैसे इस ज्ञान धन वा अनुभव के धन दान करने से भी नये राज्य में आने का पात्र बना देगा। बहुत अच्छे प्रभावित हुए अब उन प्रभावित हुई आत्माओं द्वारा सेवा कराए उन आत्माओं को भी सेवा के बल द्वारा आगे बढ़ाओ और अनेकों केप्रति निमित्त बनाओ। समझा क्या करना है। सर्विस वृद्धि को तो पा ही रही है और पाती रहेगी लेकिन अब क्लास स्टूडेन्टस में वैरायटी बनाओ।

अभी तो विदेश वालों का मिलने का साकार रूप का इस वर्ष के लिए सीजन कापार्ट पूरा हो रहा है। लेकिन देश वालों का तो आहवान हो रहाहै सुनाया ना साकार वतन में तो समय का नियम बनाना पड़ता है और आकारी वतन में इस बन्धन से मुक्त हैं अच्छा –

चारों ओर के उमंग उत्साह वाले सेवाधारी बच्चों को, सदा बाप के साथ-साथ अनुभव करने वाले समीप आत्मायें बच्चों को, सदा एक ही याद में एकरस रहने वाली श्रेष्ठ आत्माओं का बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

21.3.83

## ''गीता पाठशाला चलाने वाले भाई बहनों के सम्मुख अव्यक्त महावाकय''

''आज परम आत्मा अपने महान आत्माओं से मिलने आये हैं। बापदादा सभी बच्चों को महान आत्मायें देखते हैं। दुनिया वाले जिन आत्माओं को महात्मा कहतेम ऐसे महात्मायें भी आप महान आत्माओं के आगे क्या दिखाई देंगे। सबसे बड़े से बड़े महानता जिससे महान बने हो वह जानते हो ?

जिन आत्माओं को, विशेष माताओं को हर बात में अयोग्य बना दिया है ऐसी अयोग्य आत्माओं को योग्य अर्थात् बाप के भी अधिकारी आत्मायें बना दिया। जिनको चरणों की जूती समझा है, बाप ने नयनों का नूर बना दिया। जैसे कहावत है नूर नहीं तो जहान नहीं। ऐसे ही बापदादा भी दुनिया को दिखा रहे हैं - भारत माता शक्ति अवतार नहीं तो भारत का उद्धार नहीं। ऐसे अयोग्य आत्माओं से योग्य आत्मा बनाया। तो महान आत्मायें बन गये ना। जिन्होंने भी बाप को जाना और जानकर अपना बनाया वह महान हैं। पाण्डवों ने भी जाना है और अपना बनाया है वा सिर्फ जाना है ? अपना बनाने वाले हो ना। जानने की लिस्ट में तो सभी हैं। अपना बना लेना इसमें नम्बरवान बन जाते हैं।

अपना बनाना अर्थात् अपना अधिकार अनुभव होना और अधिकार अनुभव होना अर्थात् सर्व प्रकार की अधीनता समाप्त होना। अधीनता अनेक प्रकार की है। एक है स्व की स्व प्रति अधीनता । दूसरी है सर्व के सम्बन्ध में आने की। चाहे ज्ञानी आत्मायें, चाहे अज्ञानी आत्मायें दोनों के सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा अधीनता । तीसरी है प्रकृति और परिस्थितियों द्वारा प्राप्त हुई अधीनता। तीनों में से किसी भी अधीनता के वश हैं। तो सिद्ध है सर्व अधिकारी नहीं है।

अभी अपने को देखो कि अपना बनाना अर्थात् अधिकारी बनने का अनुभव सदा औरसर्व में होता है। वा कभी कभी और किस बात में होता है ओर किसमें नहीं होता है। बापदादा बच्चों के श्रेष्ठ तकदीर को देख हर्षित भी होते हैं। क्योंकि दुनिया की अनेक प्रकार की आग से बच गये। आज का मानव अनेक प्रकार की आग में जल रहा है। और आप बच्चे शीतल सागर के कण्ठे पर बैठे हो। जहाँ सागर की शीतल लहरों में, अतीन्द्रिय सुख की, शान्ति की प्राप्ति में समाये हुए हो। एटामिक बाम्बस या अनेक प्रकार के बाम्बस को अग्नि ज्वाला जिससे लोग इतना घबरा रहे हैं वह तो सिर्फ सेकण्डों की, मिनटों की बात है। लेकिन आजकल के अनेक प्रकार के दुख, चिन्तायें समस्यायें यह भिन्न-भिन्न प्रकार की चोट जो आत्माओं को लगती है यह अग्नि जीत हुए जलाने का अनुभव कराती है। न जिंदा हैं, न मरे हुए हैं। न छोड़ सकते न बना सकते। ऐसे जीवन से निकल श्रेष्ठ जीवन में आ गये हो – इसलिए सदा सर्व के प्रति रहम आता है ना। तब तो घर-घर में सेवाकेन्द्र बनाया है। बहुत अच्छा सेवा का लक्ष्य रखा है। अब तो गाँव गाँव या मोहल्ले में हैं, लेकिन अब गली गली में ज्ञान-स्थान हो। भक्ति में देव-स्थान बनाते हैं लेकिन यहाँ घर-घर में ब्राहमण आत्मा हो। जैसे घर घर में और कुछ नहीं तो देवताओं के चित्र जरूर होंगे। ऐसे घर घर में चैतन्य ब्राहमण आत्मा हो। गली गली में ज्ञान-स्थान हो तब हर गली में प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेंगे। अभी तो सेवा बहुत पड़ी है। फिर भी बच्चों ने हिम्मत रख जितनी भी सेवा की है, बापदादा हिम्मतवान बच्चों को मुबारक देते हैं। और सदा मदद लेते हुए आगे बढ़ने की शुभ आर्शीवाद भी देते हैं। और फिर जब घर-घर में दीपक जागकर दीपावली मनाकर आयेंगे तो इनाम भी देंगे।

बापदादा को यह देख खुशी है कि महान आत्माओं को भी चैलेन्ज करने वाले पवित्र प्रवृति का सबूत दिखाने वाले, हद के घर को बाप की सेवा का स्थान बनाने वाले, सपूत बच्चों का प्रत्यक्ष पार्ट बजा रहे हैं। इसलिए बापदादा ऐसे सेवाधारी बच्चों को देख सदा हर्षित रहते हैं। इसमें भी संख्या ज्यादा माताओं की है। अगर पाण्डव किसी भी बात में आगे जाते हैं तो शक्तियों को सदा खुशी होती है। बापदादा भी पाण्डवों को आगे करते हैं। पाण्डव स्वयं भी शक्तियों को आगे रखना जरूरी समझते हैं। पहली कोशिश क्या करते हो ? मुरली कौन सुनाव, इसमें भी ब्रहमा बाप को फालो करते हो। शिव बाप ने ब्रहमा माँ को आगे बढ़ाया और ब्रहमा माँ ने सरस्वती माँ को आगे बढाया। तो फालो फादर मदर हो गया ना। सदैव यह स्मृति में रखो कि आगे बढ़ाने में आगे बढ़ाना समाया हुआ है। जबसे बापदादाने माताओं के ऊपर नजर डाली तब से दुनिया वालों ने भी 'लेडीज फर्स्ट' का नारा जरूर लगाया। नारा तो लगाते हैं ना। भारत की राजनीति में भी देखो तो सभी पुरूष भी नारी के लिए महिमा तो गाते हैं ना। ऐसे तो पाण्डव भी किसी हिसाब से नारियाँ ही हो। आत्मा नारी है और परमात्मा पुरूष है। तो क्या हुआ। आत्मा कहती है, आत्मा कहता है – ऐसे नहीं कहा जाता। कुछ भी बन जाओ लेकिन नारी तो हो। परमात्मा के आगे तो आत्मा नारी है। आशिक नहीं हो ? सर्व सम्बन्ध एक बाप से निभाने वाले हो। यह तो वायदा है ना। यह तो बापदादा बच्चों से रूह रिहान कर रहे हैं। सभी सिकीलधे बच्चे सदा एक बाप दूसरा न कोई इसी अनुभव में सदा रहने वाले हैं। ऐसे बच्चे ही बाप समान श्रेष्ठ आत्मायें बनते हैं। अच्छा –

ऐसें सदा सेवा के उमंग उत्साह में रहने वाले, सदा सर्व आत्माओं प्रति श्रेष्ठ कल्याण की भावना रखने वाले, श्रेष्ठ हिम्मत द्वारा बाप दादा के मदद के पात्र आत्मायें – ऐसे सेवास्थान के निमित्त बने हुए महान आत्माओं को परम आत्मा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों से – बापदादा ने बच्चों की विशेषता के गुण तो सुना ही दिये। जो बापदादा के सामन सेवाधारी हैं उन बच्चों को बापदादा

सदा कहाँ रखते हैं? (नयनों में) नयन सारे शरीर में सूक्ष्म हैं ओर नयनों में भी जो नूर है वह कितना सूक्ष्म है, बिन्दी है ना। तो बाप के नयनों में समाने वाले अर्थात् अति सूक्ष्म। अति न्यारे और बाप के प्यारे। ऐसे ही अनुभव करते हो ना। बहुत अच्छा चांस ड्रामा अनुसार मिला है। क्यों अच्छा कहते हैं? क्योंकि जितना बिजी रहेंगे उतना ही मायाजीत हो जायेंगे। बिजी रहेने का अच्छा साधन मिला है ना। सेवा बिजी रहने का साधन है। चाहे किसी भी समय माया का विघ्न आया हुआ है लेकिन जब सेवा वाले सामने आयेंगे तो अपने को ठीक करके उनकी सेवा करेंगे। क्या भी होगा, तैयार होकर के ही मुरली सुनायेंगे ना। और सुनाते सुनाते स्वयं को भी सुना लेंगे। दूसरों की सेवा करने से स्वयं को भी मदद मिल जाती है। इसलिए बहुत बहुत श्रेष्ठट साधन मिला हुआ है। एक होता है अपना पुरुषार्थ करना, एक होता है दूसरे के सहयोग का साधन। तो डबल हो गया ना। प्रवृति सम्भालते सेवा की जिम्मेवारी सम्भाल रहे हो यह भी डबल लाभ हो गया। यह तो रास्ते चलते खुरा दोस्त द्वारा बादशाही मिल गई। डबल प्राप्ति, डबल जिम्मे-वारी, लेकिन डबल जिम्मेवारी होते भी डबल लाइट।डबल लाइट समझने से कभी लौकिक जिम्मेवारी भी थकायेगी नहीं क्योंकि ट्रस्टी हो ना। ट्रस्टी को क्या थकवाट। अपनी गृहस्थी, अपनी प्रवृति समझेंगे तो बोझ है। अपना है ही नहीं तो बोझ किस बात का। पाण्डव् को कभी लौकिक व्यवहार लौकिक वायुमण्डल में बोझ तो नहीं लगता। बिल्कुल न्यारे और प्यारे। बालक सो मालिक,ऐसा नशा रहता है? मालिकपन का नशा बेहद का है। बेहद का नशा बेहद चलेगा औरहद का नशा हद तक चलेगा। सदा इस बेहद के नशे को स्मृति में लाओ कि क्या क्या बाप ने दिया है, उस दिये हुए खजाने को सामने लाते हुए फिर अपने को देखो कि सर्व खजानों से सम्पन्न हुए हैं, अगर नहीं तो कौन सा खजाना और क्यों नहीं धारण हुआ है, फिर उसी प्रामण से देखो और धारण करो। समय कौन सा है? बाप भी श्रेष्ठ, प्राप्ति भी श्रेष्ठ और स्वयं भी। जहाँ श्रेष्ठता है वहाँ जरूर प्राप्ति है ही। साधारणता है तो प्राप्ति भी साधरण। अच्छा –

27.3.83

## कुमारियों को भट्ठी में प्राण अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य

आज बापदादा सब बच्चो से कहाँ मिलन मना रहे हैं? किस स्थान पर बैठे हो? सागर और नदियों के मिलन स्थान पर मिलन मना रहे हैं। सागर का कण्ठा पसन्द आता है ना। सिर्फ सागर नहीं लेकिन अनेक नदियों का सागर के साथ मिलन स्थान कितना श्रेष्ठ होगा। सागर को भी नदियों का मिलन कितना प्यारा लगता है। ऐसा मिलन मेला फिर किसी युग में होगा? इस युग का मिलना सारा कल्प भिन्न-भिन्न रूप और रीति से गाया मनाया जायेगा। ऐसा मेला मनाने के लिए आये हो ना, यहाँ वहाँ से इसलिए भागे हो ना। सागर में समाए, समान मास्टर ज्ञान सागर बन जाते हो अर्थात् बाप सामान बेहद के स्वरूप में स्थित हो जाते हो। ऐसा बेहद का अनुभव करते हो? बेहद की वृत्ति अर्थात् सर्व आत्माओं के प्रति कल्याण की वृत्ति – मास्टर विश्व कल्याणकारी। सिर्फ अपने वा अपने हद के निमित्त बनी हुई आत्माओं के कल्याण अर्थ नहीं, लेकिन सर्व के कल्याण की वृति हो। मैं तो ब्रह्माकुमारी बन गई, पवित्र आत्म बन गई – अपनी उन्नति में, अपनी प्राप्ति में, अपने प्रति सन्तुष्टता में राजी होकर चल रहे हैं, यह बाप सामन बेहद की वृत्ति रखने की स्थिति नहीं है। हद की वृत्ति अर्थात सिर्फ स्वंय प्रति सन्तुष्टता की वृत्ति। क्या यहाँ तक ही सिर्फ रहना है वा आगे बढ़ना है? कई बच्चे बेहद की सेवा का समय, बेहद की प्राप्ति का समय, बापसमान बनने का गोल्डन चान्स वा गोल्डन मैडल लेने के बजाए, मैं ठीक चल रही हूँ, कोई गलती नहीं करती, लौकिक, अलौकिक जीवन दोनों अच्छा निभा रही हूँ, कोई खिट-खिट नहीं, कोई संगठन के संस्कारों का टक्कर नहीं, इसी सिलवर मैडल में ही खुश हो जाते हैं। बाप समान बेहद की वृत्ति तो नहीं रही ना। बाप विश्व कल्याणकारी और बच्चे – स्व कल्याणकारी, ऐसी जोड़ी अच्छी लगेगी? सुनने में अच्छी नहीं लग रही है। और अब बनकर चलते हो तब अच्छी लगती है? सर्व खजानों के मालिक के बालक खजानों का महादानी नहीं बने तो उसको क्या कहा जायेगा? किसी से भी पूछो तो बाप के सर्व खजानों के वर्से के अधिकारी हो? तो सब हाँ कहेंगे ना। खजाना किसलिए मिला है? सिर्फ स्वयं खाओ पियो और अपनी मौज में रहो, इसलिए मिला है? बाँटो और बढ़ाओ यही डायरेक्शन मिले हैं ना। तो कैसे बाँटेंगे? गीता पाठशाला खोल ली वा जब चांस मिला तब बाँट लिया इसमें ही सन्तुष्ट हो? बेहद के बाप से बेइद की प्रापति और बेहद की सेवा के उमंग उत्साह में रहना है। कुमारी जीवन संगमयुग में सर्व श्रेष्ठ वरदानी जीवन है। तो ऐसी वरदानी जीवन ड्रामा अनुसार आप विशेष आत्माओं को स्वत: प्राप्त है। ऐसी वरदानी जीवन सर्व को वरदान, महादान देने में लगारहे हो? स्वत: प्राप्त हुए वरदान की लकीर श्रेष्ठ कर्म की कलम द्वारा जितनी बड़ी खींचने चाहो उतनी खींच सकते हो। यह भी इस समय को वरदान है। समय भी वरदानी, कुमारी जीवन भी वरदानी, बाप भी वरदाता। कार्य भी वरदान देने का है। तो इसका पूरा पूरा लाभ लिया है? २१ जन्मों तक लम्बी लकीर खींचने का चांस, २१ पीढ़ी सदा सम्पन्न बनने का चान्स जो मिला है वह ले लिया? कुमारी जीवन में जितना चाहो कर सकते हो। स्वतंत्र आत्मा का भाग्य प्राप्त है। अपने से पूछो – स्वतन्त्र हो या परतंत्र हो? परतंत्रता के बन्धन अपने ही मन के व्यर्थ कमजोर संकल्पों की जाल है। उसी रची हुई जाल में स्वयं को परतंत्र तो नहीं बना रहो हो? क्वेश्चन की जाल है। जो जाल रचते हो उसका चित्र निकालो तो क्वेश्चन का ही रूप होगा। क्वेश्चन क्या उठते हैं, अनुभवी हो ना। क्या होगा, कैसे

होगा, ऐसे तो नहीं होगा, यह है जाल। पहले भी सुनाया था – संगमयुगी ब्राहमणों का एक ही सदा समर्थ संकल्प है कि – ''जो होगा वह कल्याणकारी होगा। जो होगा रेष्ठ होगा, अच्छे ते अच्छा होगा।'' यह संकल्प है जाल को समाप्त करने का। जबकि बुरे दिन, अकल्याण के दिन समाप्त हो गये। संगमयुग का हर दिन बड़ा दिन है, बुरा दिन नहीं। हर दिन आपका उत्सव है ना। हर दिन मनाने का है। इस समर्थ संकल्प से व्यर्थ संकल्पों की जाल को समाप्त करो।

कुमारियाँ तो बापदादा की, ब्राहमण कुल की शान हैं। फर्स्ट चान्स कुमारियाँ को मिलता है। पाण्डव हँसते हैं कि छोटी छोटी कुमारियाँ टीचर बन जातीं, दादी बन जातीं, दीदी बन जातीं। तो इतना चान्स मिलता है। फिर भी चान्स न लें तो क्या कहेंगे। क्या बोलती हो, पता है? सहयोगी रहेंगे लेकिन समर्पण नहीं होंगे। जो समर्पण नहीं होंगे वह समान कैसे बनेंगे बाप ने क्या किया? सब कुछ समर्पित किया ना। वा सिर्फ सहयोगीग बना? ब्रहमा बाप ने क्या किया? समर्पण किया वा सिर्फ सहयोगी रहा। जगत अम्बा ने कया किया? वह भी कन्या ही रही ना। तो फालो फादर मदर करना है वा एक दो में सिस्टर्स फालो करते हो। ''इसका जीवन जीवन देखकर मुझे भी यही अच्छा लगता है।'' तो फालो सिस्टर्स हो यगा ना अब क्या करेंगी? डर सिर्फ अपनी कमजोरी से होता है। और किसी से नहीं होता। अब क्या लेंगी? गोल्डन मैडल लेंगी वा सिलवर ही ठीक है। कमजोरियों को नहीं देखो। वह देखेंगी तो डरेंगी। न स्वयं कमजोर बनो न दूसरों की कमजोरियों को देखो समझा क्या करना है!

बापदादा को तो कुमारियाँ देख करके खुशी होती है। लोगों के पास कुमारी आती है तो दुख होता है। और बापदादा के पास जितनी कुमारियाँ आवें उतना ज्यादा से ज्यादा खुशी मनाते हैं। क्योंकि बापदादा जानते हैं कि हर कुमारी विश्वकल्याणकारी, महादानी, वरदानी है। तो समझा कुमारी जीवन का महत्व कितना है। आज विशेष कुमारियों का दिन है ना। भारत में अष्टमी पर कुमारियों को खास बुलाते हैं। तो बापदादा भी अष्टमी मना रहे हैं। हर कन्या अष्ट शक्ति स्वरूप है। अच्छा –

ऐसे सर्व श्रेष्ठ वरदानी जीवन अधिकारी , गोल्डन चांस अधिकारी, २१ पीढ़ी की श्रेष्ठ तकदीर की लकीर खींचने के अधिकारी , स्वतंत्र आत्मा के वरदान अधिकारी, ऐसे शिव वंशी ब्रहमाकुमारियों, श्रेष्ठ कुमारियों को विशेष रूप में और साथ-साथ सर्व मिलन मनाने वाले पद्मापदम भाग्यवान आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

कर्मभोग पर कर्मयोग की विजय – कर्मभोग पर विजय पाने वाले विजयी रत्न हो ना। वे कर्मभोग भोगने वाले होते और आप कर्मयोगी हो। भोगने वाले नहीं हो लेकिन सदा के लिए भस्म करने वाले हो। ऐसा भस्म करते हो जो २१ जन्म कर्मभोग का नाम निशान न रहे। आयेगा तब तो भस्म करेंगे? आयेगा जरूर लेकिन आता है भस्म होने के लिए न कि भुगाने के लिए। विदाई लेने के लिए आता है। क्योंकि कर्मभोग को भी पता है कि हम अभी ही आ सकते हैं फिर नहीं आ सकते। इसलिए थोड़ा थोड़ा बीच में चाँस लेता है। जब देखते यहाँ तो दाल गलने वाली नहीं है तो वापस चला जाता।

दादी दीदी को देखते हुए – इतने हैण्डस देखकर खुशी हो रही है ना? जो स्वप्न देख रही थी वा साकार हो गया ना। इतने हैण्डस हों, इतने सेन्टर बढें यह स्वप्न देख रही थी ना। क्योंकि हैन्डस की दादी दीदी को सबसे ज्यादा आश रहती है। तो इनते सब बने बनाये हैन्डस देखकर खुशी होगी ना। भारत की कुमारियों में और विदेश की कुमारियों में भी अन्तर है, इन्हें कमाई की क्या आवश्यकता है। (डिग्री लेनी है) जब तक सेवा में प्रैक्टिस नहीं की है तब तक डिग्री की भी वैल्यु नहीं है। डिग्री की वैल्यु सेवा से है। पढ़ाई पढ़कर कार्य में नहीं लगाया, पढ़ाई के बाद भी गृहस्थी में रहे तो लौकिक में भी कहते हैं, पढ़ाई से क्या लाभ। अनपढ़ भी बच्चे सम्भालते और यह भी सम्भालते तो फर्क क्या हुआ। ऐसे ही यह भी पढ़कर अगर स्टेज पर आ जाए जो डिग्री की वैल्यु भी है। अगर यहाँ चांस मिलता है तो डिग्री आप ही मिल जायेगी। यह डिग्री कम है क्या। जगदम्बा सरस्वती को कितनी बड़ी डिग्री मिली। यहाँ की डिग्री तो वर्णन भी नहीं कर सकते।